आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 3 | अंक 16 | उदयपुर शनिवार 01 सितम्बर 2018 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

राखी और श्रवण पूजा

जीवन को खुशहाल, समरस, सरस तथा सन्तुलित बनाने के लिए समय-समय पर हमारे यहां विविध त्यौहार, उत्सव, अनुष्ठान, पर्व आदि मनाये जाते हैं। ऋतुओं के हिसाब से भी इन पर्वों में सन्तुलन सौष्ठव निहित है। कई पर्वोत्सवों के साथ ऐसी कुछ घटनाएं घटित हुईं मिलती हैं जिनसे कई तरह की सीख मिलती है। सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक सदाशयता तथा पारिवारिक प्रेम-निष्ठा के कारण भी इनका रचाव देखने को मिलता है।

जीवन को संयमित समदर्शी तथा समताभावी बनाने के दृष्टिकोण से भी कुछ व्रत-अनुष्ठान बनाये गये हैं। अधिकांश व्रतानुष्ठान तो महिला शक्ति समुदाय से सम्बन्धित ही हैं। इनमें व्यष्टि की कम, समष्टि की भावना-धारणा का प्राबल्य मिलता है।

श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को राखी अथवा रक्षाबन्धन का त्यौहार बड़े व्यापक रूप में सर्वत्र ही मनाया जाता है। इसमें मूलत: रक्षा का भाव है। आपसी सहयोग, सौहार्द्र, भाईचारा तथा वचनबद्धता का भाव सर्वोपरि रहा। ऐसी कई घटनाएं मिलती हैं। विदेशी आक्रान्ता से अपनी रक्षा करने के लिए रानी कर्मावती ने मुगल बादशाह हुमायू को राखी भेजी थी। हुमायू ने उस राखी की लाज रख कर्मावती की रक्षा की थी। ऐसी ही रक्षा राखीबन्ध भाई आल्हा ऊदल ने सन् 1182 की श्रावणी पूर्णिमा को बुन्देलखण्ड के राज्य महोबा के सरोवर कीरत सागर तट पर बहिन बनी राजकुमारी चन्द्रावलि की की थी। ऐसे और भी उदाहरण हैं जब दो भिन्न परिवार, जाति, कुल के होते हुए भी निष्कलुश स्नेह-बन्धन में बन्ध एक-दूसरे के शील और मान की रक्षा की और अस्मिता को बचाये रखा।

इससे लगता है कि यह त्यौहार किसी जाति वर्ग अथवा समाज सम्प्रदाय के बन्धन में बन्धा नहीं है। रक्षासूत्र जिन कलाइयों में बान्धे जाते हैं, बान्धने तथा बन्धवाने वाले अटूट स्नेह में बन्ध जाते हैं। जिन अन्य उपकरणों के भी जो सूत्र बान्धे जाते हैं उसके पीछे भी पारिवारिक ऋद्धि-सिद्धि आरोग्य तथा कल्याण की भावना मुख्य रहती है। वेद, पुराण, विविध धर्मों तथा लोक-मान्यताओं में राखी सम्बन्धी अनेक मान्यताओं का जिक्र मिलता है किन्तु कालान्तर में इसका विशेष महत्व भाई-बहिन के प्रगाढ़ स्नेह बन्धन से जुड़ गया। इसके साथ ही श्रवण से इसका लौकिक पक्ष जुड़ गया।

इस दिन बड़े भौर में महिलाएं घर के दरवाजों के दोनों ओर थोड़ी ऊंचाई पर खड़िया से पुताई करने के उपरान्त प्रतीकात्मक रूप में श्रवण के विविध अंकन उकेरती हैं। मनुष्य कृतियों के अलावा सातिया नारेळ के प्रतीक भी शोभा पाते हैं। ये मण्डन, माण्डने गेरू, कुमकुम्, मेंहदी या फिर हड़मची-हिरमिच से माण्डे जाते हैं। महिलाओं की दक्षता के अनुसार इनका आंकड़-बांकड़ उकेरन बड़ा ही आकर्षक तथा कलात्मक होता है। इनमें कोई सधासधाया नापजोख नहीं मिलता किन्तु

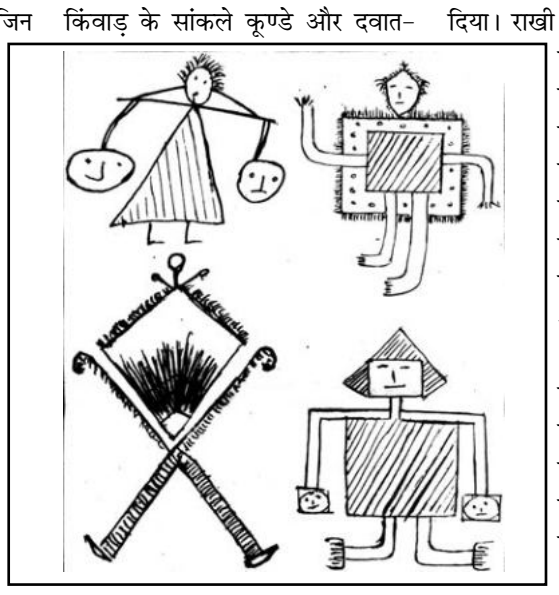

माण्डने वाली अपनी भावनात्मक परिकल्पनाओं में जो सहज रूपांकन बनाती हैं वे देखने वाले की कल्पनाओं में अनेक नई उद्भावनाओं से सौंदर्यपूरित लगते हैं। राखी का सूत्र सर्वत्र पूजाघर, रसोईघर, शयनघर, बैठक स्थल, मुख्य द्वार, नाल तथा प्रत्येक किंवाड़ के सांकले कूण्डे और दवात-कलम के भी बान्धा जाता है। दैनिक उपयोग की महत्वपूर्ण चीजों यहां तक कि ताला-कूंची, मूसल, हमामदस्ता, सूप, टोपले के भी कच्चे धागे से निर्मित फूंदे-फूंदी बान्धे जाते हैं। तब राखियां भी भोडल वाली होती थी।

श्रवण के सम्बन्ध में विविध कथाएं प्रचलित हैं। इनमें एक कहानी मेरी बड़ी बहिन सोवन जीजां (92) ने इस प्रकार सुनाई-

श्रवण के एक बड़ी बहिन थी जिसका विवाह पास के गांव में कर दिया गया। श्रवण उससे मिलने गांव के बाहर जा रहा था कि जोर की प्यास लगी। वह पास की बावड़ी में उतरा किन्तु पैर फिसल गया और वह पानी में जा डूबा और मृत्यु को प्राप्त हुआ। थोड़े ही दिनों में उस बावड़ी में कनेर की बेल फैली। इतनी लटपट फैली कि पूरे कुए को ढक दिया। राखी का दिन आया तब श्रवण की बहिन भाई को राखी बान्धने चली। उसी बावड़ी में वह पानी पीने उतरी। देखा कि कनेर की बेल की जगह-जगह सुन्दर फूल खिले हुए हैं। ऐसा उसने पहलीबार ही देखा तो भारी अचरज हुआ।

उस बेल से उसने एक फूल तोड़ा। तोड़ते ही बेल से आवाज सुनाई दी, 'तू मेरे राखी बान्धने आई हो और कलाई तोड़ ले जा रही हो।' यह सुनते ही वह डरी। भागी-भागी गांव पहुंची। देखते-देखते पूरे गांव के लोग वहां इकट्ठे हो गये। बहिन ने सबके सामने फूल तोड़ा तो वही आवाज सुनने को मिली।

यह खबर जब श्रवण के अन्धे माता-पिता ने सुनी को अत्यन्त दुखी हुए। उन्होंने बड़े ही करुण क्रन्दन में भगवान से हाथ जोड़ विनती की - 'आज के दिन किसी भी बहिन को अपने भाई से विलग मत करो। बिछुड़े भाई-बहिन को पुन: मिला दो।' भगवान ने उनकी विनती सुन श्रवण को जीवित कर दिया।

श्रवण ने ऐसा चमत्कार देख, कारण पूछा। आवाज मिली, 'इन्हें चारों धाम का तीर्थाटन कराओ।' श्रवण ने बहिन के घर जाकर राखी बान्धी। कांवर बनवाई और उसमें माता-पिता को बिठाकर तीर्थयात्रा का श्रीगणेश किया। चलते-चलते एक जंगल में पहुंचे। वहां माता-पिता को प्यास लगी। श्रवण पानी की तलाश में नदी किनारे पहुंचा। वहां बहते पानी से लोठा भरना चाहा। पानी भरने की आवाज सुनकर राजा दशरथ ने जो शिकार की तलाश में थे, शब्द भेदी बाण चलाया जो श्रवण को जा लगा। नदी किनारे दशरथ ने जब श्रवण को बुरी तरह तड़फते देखा तो उन्हें घोर पछतावा हुआ।

श्रवण ने दशरथ को अपने माता-पिता को पानी पिलाने की भलावण दे प्राण त्याग दिये। दशरथ उनके पास पहुंचे किन्तु वे पदचाप से समझ गये कि वह श्रवण नहीं है। घबराये और बुरी तरह पीड़ित हुए उन्होंने श्राप देते कहा, 'जिस तरह हम अपने पुत्र के वियोग में प्राण विसर्जित कर रहे हैं उसी तरह तुम भी एक दिन अपने पुत्र के वियोग में अपना शरीरान्त करोगे।'

रक्षाबन्धन के दिन श्रवण नक्षत्र भी होता है। श्रावण, श्रवण पुत्र और श्रवण नक्षत्र। इस दिन श्रवण ही श्रवण सब ओर देखने-सुनने-समझने को मिलता है। हर घर में, घर-घर में संतति ऐसी हो जो 'सरवण पूत' की तरह आज्ञाकारी एवं श्रद्धाशील बने रहकर अपने माता-पिता की सेवा-चाकरी करे।

खबरों में अच्छी खबर

-डॉ. महेन्द्र भानावत -

रक्षाबन्धन के बाद ठंडी राखी से आदिवासी भीलों में प्रचलित पारम्परिक नृत्यानुष्ठान गवरी का प्रदर्शन शुरू हो गया है। सन् 1965 में मैंने गवरी को अपनी शोध का विषय बनाकर 1967 में पूरा किया और 1968 में पहलीबार मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित समारोह में मुझे पीएच. डी. की उपाधि प्रदान की गई।

यह वह समय था जब गवरी जैसे विषय पर पीएच. डी. पाना कल्पनातीत था। समझेबुझों ने तो कटाक्ष भी किया कि गवरी पर ऐसा लिखने जैसा कुछ है ही नहीं। निर्देशक डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' को भी लोगों ने परेशानी में डाल दिया। उन्होंने मुझे इसका संकेत भी दिया था पर मैंने उन्हें आश्वस्त किया कि मेरा यही विषय रहेगा और चाहूं तो मैं गवरी का खेल आपको दिखा सकता हूं। शोध का अर्थ ही यही है कि जिस पर कोई सामग्री नहीं है उसी को सर्वथा प्रामाणिक ढंग से प्रस्तुत कर एक नई शुरूआत की जाय। वे मान गये। यह मेरे कार्य के प्रति उनकी दृढ़ धारणा और पक्का विश्वास था।

भाग जोग से डॉ. सत्येन्द्र और डॉ. नगेन्द्र मेरे परीक्षक बने। डॉ. सत्येन्द्र तो मेरे लेखन और शोध कार्य से परिचित थे पर डॉ. नगेन्द्र लोकसाहित्य के प्रति आस्थावान नहीं थे सो उन्होंने कहा भी कि यह विषय तो निबन्ध के लिए भी ठीक नहीं है फिर इस पर पीएच. डी. करना कैसे सम्भव हुआ।

मुझे लगा कि उन्होंने थीसिस पढ़ी नहीं है। साहित्यजगत में तब उन्हीं की सर्व ओर तूती बोलती थी। इसलिए मुझे प्रसन्नता हुई और थोड़ा गर्व भी महसूस किया कि उनके वरद आशिष से मैंने यह उपाधि प्राप्त की। सन् 1971 में मेरा यह शोधकार्य लोकनाट्य परम्परा और प्रवृत्तियां नाम से बापना प्रकाशन चौड़ा रास्ता, जयपुर-3 से प्रकाशित हुआ। कुल 346 पृष्ठों की 75 रूपये की यह पुस्तक चली तो ऐसी चल निकली कि बाद में अन्यों ने अपने-अपने प्रदेशों के लोकनृत्यों, लोकनाट्यों को खंगालना शुरू किया जिसके परिणामस्वरूप कई पुस्तकें प्रकाश में आईं। यह कार्य अब तो अनेक विश्वविद्यालयों में पढ़ाई तथा शोधकर्म के लिए मूल्यवान तथा उतना ही उपयोगी सिद्ध होता जा रहा है।

गवरी पर मेरा शोधकार्य तब से लेकर अब तक भी जारी है। पचासों गवरी खेल देखते-देखते, उनके पात्रों से रू-ब-रू होते-होते और अखबारों, शोधपत्रिकाओं तथा विभिन्न संवाद एजेंसियों के माध्यम से मैं गवरी पर निरन्तर लिख रहा हूं। गवरी ही नहीं, लोकजनित ऐसे अन्य कई माध्यम हैं जिन पर पिछले 50-60 वर्षों में लिखते-लिखते यह निष्कर्ष रहा कि वे अनेक विधायें जीवित, पुनर्जीवित हो गईं जो अंतिम स्वांस ले रही थीं। कठपुतली, कावड़, पड़ जैसी विधाओं को तो राष्ट्रीय ही नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय पहचान मिली और इनसे जुड़े कलाकार पद्मश्री तक से नवाजे गये।

लोकजीवन में प्रचलित अनेकानेक लोकानुरंजन तो लोकधर्मिता के आवश्यक धर्मानुष्ठान एवं जीवन-संस्कार ही बने हुए हैं फिर विविध लोकोत्सवों पर भी उनकी रंगीनियां बड़े जोश और उत्साह में रूपायित हुई मिलती हैं। इन पर लिखते-लिखते और अन्य प्रांतों की जीवनधर्मिता का अध्ययन करते-करते देखने को मिला कि राजस्थान इन सबमें सर्वथा-सर्वोपरि समृद्ध प्रांत है। पं. नेहरू ने इसीलिए राजस्थान को रंगों का प्रदेश कहा था।

मैं विश्वविद्यालयों की बड़ी नौकरी में नहीं जाकर भारतीय लोककला मंडल में लोकमनीषी देवीलाल सामर के सान्निध्य में रहा। वहीं पहलीबार लोककलाकारों के शिविर आयोजित किये। अखिल भारतीय लोकविषयों से संबंधित संगोष्ठियां, लोकानुरंजन समारोह, लोककलाकारों के प्रदर्शन, कठपुतली समारोह, लोककला तथा शिल्पजनित मेले आयोजित किये। इनका मैंने संयोजन किया। यहीं से लोककला तथा रंगायन पत्र प्रारंभ किये जिनका मैंने संपादन किया।

-शेष पृष्ठ सात पर

13 सितम्बर, 84वें जन्म दिवस पर-

डॉ. नरेन्द्र भानावत : अज्ञान में ज्ञान की ज्योति

- नंद चतुर्वेदी -

जब तक वह गरीब दुनिया, गरीब गांव, चक्की पीस-पीसकर अपने बालकों को पढ़ाने वाली माताएं और छोटे 'बींद-बींदणियां', चार-चार बालिश्त घूंघट निकालने वाली बहुएं हैं, तब तक डॉ. नरेन्द्र भानावत के सपनों को पूरा करने का काम बाकी है।

डॉ. नरेन्द्र भानावत ने जितने साहस से बल्कि जितने पराक्रम से जिंदगी का संघर्ष किया, उतने ही साहस और पराक्रम से मृत्यु का मुकाबला भी किया। मृत्यु से मुठभेड़ के दिनों में वे कविताएं लिखते रहे। जीवन और मृत्यु को एक साथ, सम्पूर्णता में देखना ही वास्तविक अध्यात्म है और डॉ. नरेन्द्र ने ही उसे पूरी तरह आत्मसात किया था।

अपने पुरुषार्थ से ही डॉ. नरेन्द्र भानावत ने अपरिचित और प्रतिकूल दुनियां को अपनी, जानी-पहचानी, मित्र दुनियां बना लिया था। इस दुनियां को जीतने में सबसे ज्यादा मजबूती नरेन्द्र की मां ने बनाई थी। 'ए मेरे मन' कविता संग्रह में 'मां' शीर्षक कविता में वह संघर्ष अंकित है जो 'मां और जीजी' ने अपने 'बेटों' और 'भाइयों' के लिए किया। 'मां' के जीवन-संघर्ष को रेखांकित करते हुए नरेन्द्र ने लिखा है-

मुंह झांकरे उठकर दूसरों का अनाज पीसती
पड़ोसियों के घर केसर कुई से
पानी लाती
गेहूं और दाल बीनती
चरखा चलाती
कपड़े सीती
गांव के पास जंगल से लकड़ी लाती
कण्डे बनाती।
मां! तुमने जीवन में दुख ही दुख सहा।

इस कविता में नरेन्द्र ने अपनी मां को बार-बार प्रगतिशील कहा है क्योंकि 'अनपढ़ होकर भी तुम पढ़ाई का मोल समझती थीं।' पढ़ाई के सिलसिले में ही दूसरी बार नरेन्द्र अपनी मां की प्रशंसा में लिखते हैं- 'तू अनपढ़ होकर भी प्रगतिशील विचारों की थी। तूने सब सुविधाएं दीं। समाज की रूढ़ियों को ललकारा। बहू उच्च शिक्षा लेकर, विदूषी बनकर समाज की सेवा करे। बच्चों में संस्कार के बीज वपन करे। इसी भावना से तूने हम दोनों को आगे बढ़ाया। खुद कष्ट की अग्नि में तपती रही, खपती रही। पर हम शुद्ध स्वर्ण बनकर निखरे, यही सदा तेरी चाह रही।' अपने रोगग्रस्त हो जाने के कारण मां की वृद्धावस्था में सेवा न कर पा सकने का अवसाद नरेन्द्र की इस कविता में अत्यन्त भावुकता के साथ प्रकट होता है।

महेन्द्र ने अपने भाई के विवाह की रोमांचक और एक अर्थ में पर्दा-प्रथा को तोड़ने की जिद्द वाली बात सभी को बताई थी। वह महत्वपूर्ण बात थी, अब नहीं, लेकिन उन दिनों जब नरेन्द्र इंटरमीडिएट में पढ़ रहे होंगे और शान्ता भानावत, गांव के स्कूल में, आठवीं कक्षा में। महेन्द्र ने बताया कि भाई की जिद्द से हड़कम्प-सा मच गया। दहेज में कुछ न लिया जाय, विवाह-वेदिका पर बहू घूंघट निकाल कर न बैठे, जैसी भाई की शर्तें थीं।

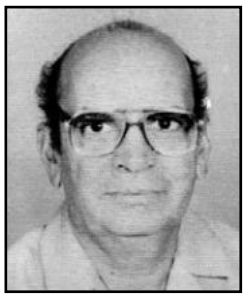

चालीस-पचास वर्ष पहले के गांव में ब्राह्मण-बनियों के परिवारों की जटिल मनोरचना और रूढ़िवादिता को समझते-देखते हुए सचमुच नरेन्द्र के विवाह का शर्तनामा विस्मयकारी था।

नरेन्द्र गरीब परिवार के थे और दहेज के धन का आकर्षण बहुत स्वाभाविक था लेकिन 'आदर्शों की चमक' किसी मुलम्मे की तरह उनके मन पर नहीं चढ़ी थी और वे जीवन के अन्त तक 'तृष्णा' के विरूद्ध खड़े रहे। नरेन्द्र ने 'मेरी रचना' कविता में अपने रूढ़िमुक्त विवाह और पत्नी डॉ. शान्ता भानावत की अदम्य कर्म-स्फूर्ति का मोहक वर्णन किया है। 'मेरी रचना' के कुछ अंश इस प्रकार हैं-

'बहू दुहरा काम / करती है / घर का भी, कॉलेज का भी / वह दोनों दायित्वों को समभावपूर्वक / कुशलतापूर्वक सम्भालती है / कभी आह नहीं करती / कभी झुंझलाहट नहीं लाती / बहू के रूप में वह मां की सेवा करती है / पत्नी के रूप में अपना पूरा फर्ज निभाती है / वह तन-मन से समर्पित है मेरे लिए।' 'मैं रूग्ण हूं तो वह मेरी औषध है / मैं थका-हारा हूं तो वह मेरा विश्राम है / मैं निराश हूं तो वह मेरी आशा है / मैं पथिक हूं तो वह मेरी मंजिल है / मैं मूक हूं तो वह मेरी भाषा और अभिव्यक्ति है / मैं शब्द हूं तो वह मेरी रचना है।'

मैं लगातार डॉ. नरेन्द्र भानावत के कठिन जीवन-संघर्ष के सम्बन्ध में सोचता हूं। उनकी निर्धनता, विषम सामाजिक परिस्थितियां, अन्त में भयावह रूप से मौत की ओर खींचते हुए कैंसर और इससे कुछ समय पहले आंख के 'रेटिना डिटेचमेंट' के सम्बन्ध में और इन सबके बावजूद उनकी उत्कृष्टताओं, उनके लेखन, उनकी विद्वता, धर्मास्थाओं और विषाद रहित मन-स्वभाव के बारे में, तब मैं ज्यादा जिज्ञासातुर हो जाता हूं और उन शक्ति स्रोतों को ढूंढने लगता हूं जो मनुष्य के पास हैं और जो उसे अपराजेय और अद्वितीय बनाते हैं।

यहीं मुझे धर्मास्थाओं की शक्ति पर विचार करने की आवश्यकता प्रतीत होती है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि धर्मोन्माद ने कई बार दुनिया को तबाह कर दिया है और वैचारिक पराधीनता को बढ़ाया है लेकिन धर्म-दृष्टियों ने कट्टरताओं के विरूद्ध अगणित लड़ाइयां भी लड़ी हैं और बगावत करने वालों ने बहादुरी से प्राण तक दिये हैं। वास्तव में ही दूसरी रचनात्मक शक्तियों की तरह उदार धर्म-दृष्टियों ने मनुष्य के रचनात्मक संकल्पों को बनाने और बचाने में बहुत मदद की है। नरेन्द्र के उल्लास और शक्ति का केन्द्र उनकी धर्मास्थाएं ही हैं। उनके जीवन और कविताओं को मिलाकर देखें तो वे उस बोध की ओर ले जाती हैं जिससे जीवन के गहनतम अर्थ खुलते हैं। कविता या साहित्य का आनंद 'रचना' ही है लेकिन किसे रचना है, इसका उत्तर देना हो तो शायद नरेन्द्र ने जो उत्तर दिये हैं, उनसे हम सहमत होंगे। वे लिखते हैं-

मैं अपने भार से लदा न रहूं
अपने रस को अपने में कैद न रखूं
अपना फल सबको बांटूं
अपने रस से सबको सरस बनाऊं
आश्रयहीन को आश्रय दूं
दग्ध संतप्त राही को
स्नेहभरी छांव दूं।

किसी जगह जाकर अध्यात्म का यह अनुभव सामाजिक अनुभव के साथ तदाकार हो जाता है तब वह न दीनता का भाव रहता है न दया करने की इच्छा, वह शुद्ध प्रार्थना होती है। प्रार्थना की कविता में व्यापक लोक-हित की कामना होती है। साधुओं की और गृहस्थों की भी। गृहस्थों की प्रार्थना-कविताएं ज्यादा विदग्धता के साथ लिखीं होती हैं क्योंकि वे जिन्दगी के सुख-दुख, मान-अपमान की गरम राख से निकलती हैं।

'ए मेरे मन' की प्रार्थना-कविताएं निकट आती मृत्यु के दबाव में तो लिखी ही गई हैं, लेकिन वे दरअसल एक आह खाए हुए और दुख से भीगे हुए कवि ने लिखी है। महत्वपूर्ण तब भी यह है कि उनमें व्यक्तिगत निर्वाण की नहीं, लोकमंगल और समता की अत्यन्त आत्मीय और उदात्त कामनाएं व्यक्त हुई हैं। यह धर्म की शक्ति है। धर्म इस तरह कविता की शक्ति होता है। कविता में नरेन्द्र ने लिखा-

प्रभु!
मैं तुम्हारी प्रार्थना इसलिए करता हूं कि
मैं जन-जन का कल्याण करूं
अंधेरे में प्रकाश बिखेरूं
अज्ञान में ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित करूं
कहीं अभाव-अभियोग न रहे
हिंसा, आतंक और भय का भूत भागे
सब परस्पर शांतिपूर्वक हिलमिल कर रहें
एक-दूसरे का साथ दें
साथ-साथ उठें
साथ-साथ खाएं
साथ-साथ काम करें
किसी के प्रति राग-द्वेष न हो
दूसरों की बढ़ती देखकर प्रसन्नता का भाव जगे।

देखने की बात यह है कि अपने दुखों और संतापों में से हम क्या निकालते हैं- कौनसा जीव-दर्शन?

नरेन्द्र ने अपने अनुभवों से जिस तरह का जीवन दर्शन किया था वह जैन दर्शन से प्रभावित था, लेकिन वह विकृत यथार्थ से टकराता भी था। वे प्रफुल्ल मन वाले व्यक्ति रहे और जो सत्य उन्होंने तलाश किया वह 'सार्वजनिक सुख' था।

इस तथ्य की तरफ मैंने 'माटी-कुंकुम' की कविताओं का परिचय कराते हुए लिखा है- 'माटी-कुंकुम' की कविताओं में उत्साह का जो 'अनवरत स्वर' है वह नरेन्द्र के पितृहीन संसार में भोगी हुई यातनाओं के खिलाफ 'अस्तित्व रक्षा' का सामूहिक स्वर है। आदमी में जो पराजीत न होने का भाव है, वह इन कविताओं में है। एक के बाद एक कविता पढ़ता हूं तो इतना स्पष्ट होता है कि आदमी के पास जो न टूटने वाला सत्व है और जिसे धारण किये रहने की आकांक्षा आदमी में रहेगी, वह इन कविताओं को खास तरह का स्थायित्व देंगी। दुनिया को सबके लिए रहने लायक सुखद और सुन्दर बनाना धर्म-नीतियों और आस्थाओं का व्यापक हिस्सा है, यह नरेन्द्र भूलते नहीं हैं।

अब भी नरेन्द्र की याद में मेरे सामने वह दुनिया और वह समाज है जिसे खूबसूरत बनाने की वह लगातार कोशिश करते रहे। जब तक वह गरीब दुनिया, गरीब गांव, चक्की पीस-पीसकर अपने बालकों को पढ़ाने वाली माताएं और छोटे 'बींद-बींदणियां', चार-चार बालिश्त घूंघट निकालने वाली बहुएं हैं, तब तक डॉ. नरेन्द्र भानावत के सपनों को पूरा करने का काम बाकी है।

'एड़ो म्हारो राजस्थान' एवं 'शिव दर्शन' लोकार्पित

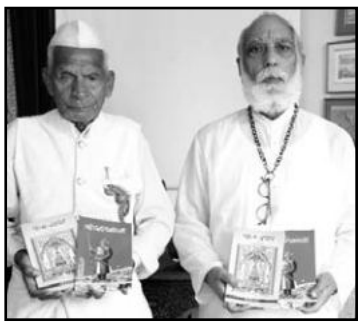

ख्यातक वि माधव दरक द्वारा मेवाड़ी भाषा में लिखित कविता संग्रह 'एड़ो म्हारो राजस्थान' एवं प्रेरक कविताओं से ओत-प्रोत पुस्तक 'शिव दर्शन' का विमोचन शंभू निवास पैलेस में महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन के अध्यक्ष एवं प्रबंध न्यासी अरविन्दसिंह मेवाड़ ने किया। 'एड़ो म्हारो राजस्थान' में कविताओं के माध्यम से राजस्थान की खूबियों का बखान किया गया है जबकि 'शिव दर्शन' में देश के 12 ज्योतिर्लिंगों पर ओजस्वी कविता लिखी गई है। इस अवसर पर माधव दरक ने महाराणा भूपाल सिंहजी, महाराणा भगवतसिंहजी एवं अरविन्दसिंहजी पर लिखी ओजस्वी कविताओं की प्रति भेंट की। श्री दरक द्वारा लिखित दोनों ही पुस्तक महाराणा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशन ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित हैं।

उदयपुर को मिली जायके के जादूगर 'ओको' की सौगात

उदयपुर। चंडीगढ़ और बेंगलूरू के लोगों के दिलों पर राज करने के बाद पुरस्कार विजेता रेस्टोरेंट चेन 'ओको झीलों की नगरी में लोगों को सबसे अच्छे फूड की कमी को दूर करने जा रही है।

ओको लेकसिटी के द ललित लक्ष्मी विलास में 'पेन एशियाई व्यंजनों' की सौगात लेकर आया है। यहां मलेशिया, कोरिया, जापान, इण्डोनेशिया, थाइलैण्ड, चीन आदि देशों के करीब 30 प्रकार की विशेषताओं से परिपूर्ण विभिन्न पकवानों को उपलब्ध करवाया जाएगा। डीनर के दौरान हर पकवान की प्रामाणिकता को उस देश की रेसिपी और मसालों से महकाया जाएगा।

एक्जीक्यूटीव शेफ सुदर्शन ने बताया कि सबसे खास बात यह है कि ओको में स्वाद की यादगार सौगात उन्हीं देशों के शेफ दे रहे हैं जहां का फूड है। स्वाद की ऑरिजनलिटी भी ऐसी खरी कि फूड आइटम्स को वहीं पर गार्डन में उगाया जाएगा। मनोरम प्राकृतिक परिवेश के बीच जब मनभावन लजीज जायके का आनंद मिलेगा तो उसे शब्दों में बयां करना मुश्किल होगा। ऐसा प्रयोग अब तक झीलों की नगरी में नहीं हुआ। इस सबसे अनूठे पेन एशियाई रेस्टोरेंट में भोजन करने का अहसास यादगार और जीवंत होगा।

पेरिस में पांच माह का पठन

- विकल्प मेहता -

एम.बी.ए. की पढ़ाई के दौरान छात्र स्थानांतरण कार्यक्रम में भाग लेने का मौका मिला। प्रबंध विषय में उच्च शिक्षा लेने वाले छात्रों को वैश्वीकरण के इस युग में अलग अलग सभ्यताओं से रूबरू होने का मौका मिलता है जो उन्हें भविष्य में बहुर्राष्ट्रीय संस्थानों में काम करने योग्य बनाता है। मध्यमवर्गीय परिवार से होने के कारण काम समय में इतनी राशि इकठ्ठा कर पाना थोड़ा जटिल था परन्तु मेरे दृढ़ निश्चय व पिताजी की त्वरित मदद से वित्तीय व्यवस्था पूर्ण हो गई। रिश्तेदारों की नजर में यह फैसला मात्र पैसों का सत्यानाश करना भर था परन्तु एक अकेली यात्रा किस तरह एक आदमी की जिंदगी बदल कर उसे एक बेहतर इंसान बनाती है यह मैंने वहीं सीखा।

18 अगस्त 2013 का दिन में कभी नहीं भूल सकता, छात्र स्थानांतरण कार्यक्रम में चयनित होकर फ्रांस के ईएससी रेन्स विश्वविध्याल में एक सेम्स्टेर पढ़ने का मौका मिला जो काफी अभूतपूर्व एवं उत्साहवर्धक रहा। वह काफी उत्साह और हर्ष का समय था और मेरे जैसे साधारण छात्र के लिए विदेश यात्रा की महत्ता अधिक विशालकाय प्रतीत हो रही थी। झटाझट पासपोर्ट व वीसा के लिये आवेदन कर दिया। छात्र वीसा होने के कारण बिना विलम्ब वीसा जारी हो गया। मेरा मृगी-मन अनेकानेक रम्य-सुरम्य अनुभवों को प्राप्त करने की कुलान्चे भरने लगा।

मेरे साथ कुल 6 छात्र इस कार्यक्रम का हिस्सा बने। मामला 5 महिने का था, इसलिए पूरी तैयारी करना बहुत जरुरी जान पड़ रहा था। हाथ के हाथ गूगल पर विश्वविध्यालय, वहां का माहौल, छात्रावास-सुविधायें, भारतीय बाज़ार, पहुंचने के साधन, मौसम के हाल, टिकट, खाने की व्यवस्था आदि की जानकारी लेना शुरु कर दिया। भोजन के लिहाज से में थोड़ा भाग्यशाली रहा चूंकि मेरे साथ मेरे 3 अन्य मित्र देविना, पुलकित व पुनीश शुद्ध घासाहारी व शाकाहारी थे। हमने अपनी पंगत बना कर भोजन की व्यवस्था की पूर्ण रूप से तैयारी कर ली। सारे सामान की सूची आपस में बांट ली गई। कूकर चावल और मसाले मेरे खाते में एवं कढ़ाई, दाल, घी, मेग्गी, चाय की छलनी (यूरोप में उबली चाय का जुगाड़) एवं खाकरों का जिम्मा पुनीश एवं पुलकित पे डाल दिया गया।

जब सामान पैक हो रहा था तभी ये पता चल गया था कि टिकट पर लिखे 20 किलो के फरमान से कहीं कम सामान हो रहा है। वजन की मात्रा बढ़ाने की जुगत तुरन्त प्रभाव से चालू हो गई। दो ऐसे लोगों को पकड़ा गया जिन्हें इस विषय की पूरी जानकारी थी। टिकट करवा कर में देविना और गीतांश एयर इण्डिया के ऑफिस पहुंचे। जिस लाल फीताशाही के बारे में एम.बी.ए. में पढ़ा था वह साक्षात रुबरु हो गई। दफ्तर में घुसते ही हमारे निवेदन को सिरे से खारिज कर दिया गया।

उम्र का उमड़ाव और उच्च शिक्षा की तालीम खून में उबाले मारती हार नहीं मानने दे रही थी। पंद्रह मिनट विचार विमर्श करने के पश्चात बाबू लोगों की बजाय किसी अफसर से मिलने का निश्चय कर धबाधब एक सीनियर महिला अफसर के कमरे में घुस पड़े।

यहां यह जाना कि हिंदुस्तान एक भावुक राष्ट्र है, जहां के लोग अमूनन भावनाओं के शिकार रहते हैं। बातचीत से पता चला कि उस महिला अफसर का बेटा भी विदेश में अध्ययनरत है। इसी का फायदा उठाते हुए वजन को 40 किलो करने की फरमाइश कर दी गई। हमारा रुआंसा सा चेहरा देखते ही टिकटों पर मुहर लग गई ।

14 जनवरी 2014 को सुबह 10 बजे हमारा विमान उड़ना तय था। पहली विदेश यात्रा का अनुभव बहुत खास होने वाला था। इसी रोमांच के मारे रात्रि की नींद और विदेश के ख्वाब आपस में टकराते रहे और मैं निष्क्रिय शून्य में खोया सुबह का इन्तजार करता रहा। दस घंटे दिल्ली से पेरिस का अन्तर्राष्ट्रीय सफर बहुत उन्मादित और पेट में गुदगुदी कर देने वाला था। बोइंग 787 का नाम कुछ दिनो पहले ही अखबारों में पढ़ा था। विश्वास नहीं हो रहा था कि यह इतना जल्दी सच साबित हो रहा है। दुनिया के सबसे आधुनिक विमान में पहली विदेश यात्रा एक बूंद की तरह निश्चय-अनिश्चय के भंवरजाल में गुदगुदा रही थी।

हर व्यक्ति की सीट के सामने एक उपकरण लगा था जिसमें फिल्मी गाने, नाटक, खबर, नक्शा, खेल सब कुछ उपलब्ध था। 18000 फीट की उंचाई पर यह सब किसी इंद्रधनुषी स्वप्न की तरह लग रहा था। हम रात 11.30 (फ्रैंच टाईम) पेरिस एअरपोर्ट पहुंचे।

यह फ्रांस का सबसे आधुनिक एवं बड़ा हवाई अड्डा है। भारतीय विमानतलों पर सुरक्षा व्यवस्था काफी चुस्त होती है पर पेरिस में एक भी व्यक्ति सुरक्षा के लिहाज से उपलब्ध न था। हर कोई बड़ी आसानी से बाहर और अन्दर जा पा रहा था। पहली विदेश यात्रा होने के कारण हम कुछ ज्यादा ही सावधान और सूचनाओं से लैस थे। हमने सिम कार्ड भारत में ही खरीद लिये थे जो कि आपस में मुफ्त व भारत में किफायती दरों में फोन करने की सुविधा दे रहे थे।

हवाई जहाज से उतरते ही माता-पिता को सकुशल पहुंचने का समाचार दे हवाई अड्डे का मौका

मुआयना शुरू कर दिया। दो जनों को सामान की रखवाली का जिम्मा दे हम अगले दिन की रेलयात्रा के बारे में पूछताछ करने निकल पड़े। रेलवे स्टेशन जा कर पता पड़ा कि प्लेटफॉर्म पर 10 मिनट पहले पता चलेगा व तुरन्त प्रभाव से अपना डिब्बा ढूंढ उसमे सवार होना पड़ेगा। इस पूरे कार्यक्रम के दौरान मुझे 3 चीजे फ्रांस के बारे में समझ आई। पहली कि यहां के लोग काफी अनुशासनप्रिय हैं। हमारे देश में नियम तोड़ना शान समझा जाता है। उसी शान में हम पूछताछ खिड़की पर लाइन तोड़ समाचार लेने की कोशिश करने लगे। अन्दर बैठे महोदय ने हमें लाईन से आने को कहा तब पता चला की खिड़की से पहले लगी पीली लाइन के पीछे खड़े होकर अपनी बारी का इन्तजार करना है। सीख मिली कि यहां सब बराबर हैं। कोई किसी का बाप, ताऊ याकि नेता नहीं है।

दूसरी कि यहां के लोग अपनी मातृभाषा का बहुत सम्मान करते हैं। सभी बातों को अंग्रेजी में समझने के पश्चात भी वे जवाब फैंच में ही देते हैं। भला हो पुलकित का कि जिसने 10वीं कक्षा में थोड़ी बहुत फ्रैंच पढ़ी थी वर्ना हमारा तो बंटाधार निश्चित था। तीसरी सबसे अच्छी बात यह थी कि किसी भी प्रकार के वार्तालाप की शुरुआत ड्डश्छद्धद्रशद्धह्न और अंत द्रद्गह्म्४ से होता है। फ्रैंच में सब लोग एक-दूसरे का अभिवादन किये बिना कोई काम शुरु नहीं करते।

हमारे पास पैसों का अभाव था इसिलिए यह निश्चय कर लिया गया कि घूमने में कोई कोताही नही बरती जायेगी किंतु ठहरने में व खाने में पैसा बचाया जायेगा। इस निश्चय के फलस्वरूप उस कड़कड़ाती ठण्ड में हम तौलिया बिछाकर जमीन पर सो गये। लोग हमें घूरते हुए आ-जा रहे थे लेकिन हम बिना किसी शर्म-संकोच के आराम से सो रहे थे। हिन्दुस्तानी संस्कारों में पले होने का ही यह प्रभाव था।

अगले दिन विश्वविद्यालय पहुंचना था। हम सब अपने भारी भरकम सामान के साथ प्लेटफॉर्म पर रेल का इन्तजार कर रहे थे। हमारी बोगी 8एच थी। हमने सिक्योरिटी गार्ड से पूछा तो उसने संकेत कर हमें दिशा-निर्देश दे दिया। जब ट्रेन आई तो पता चला कि हम गलत जगह खड़े थे। गलती हमारी भी नही थी कारण कि 'एच' हो फ्रैंच में 'आश' कहते हैं पर हमें 'एस' सुनाई दिया। बहरहाल गलती तो हो ही गई थी पर हमने हौंसला साधा और भीड़ को चीरते हुए विपरीत दिशा में अपनी बोगी की तरफ बढ़ चले। इस आपाधापी में हम चारों अलग-थलग हो गये। दौड़-दौड़ कर हमने अपनी बोगी पकड़ी और जैसे-तैसे सामान अन्दर फेंक ऊपर चढ़े तभी याद आया कि देविना हमारे साथ नहीं है। हतप्रभ हो बोगी से उतर में व पुलकित उसे ढूंढने लगे। इस बीच हम सबमें ठिगनी देविना दिखी जो भीड़ के उस महासागर में अपने को संभाल नहीं पा रही थी। हमने हड़बड़ी में उसे और उसके सामान को उठा अन्दर फैंक संतोष की सांस ली। बोगी के गेट भी बंद हो गए। देविना का चेहरा देखने लायक था। वह फफक-फफक कर रो पड़ी। 200 यूरो वाला उसका बटुआ भीड़ में कहीं गिर गया था। वहां हमें पता चला कि एक रोती हुई युवती को चुप करना कितना कठिन व मुश्किल है। एक प्रहर समझाईश के बाद वो सामान्य हुई।

पेरिस से रेन्स का 4 घण्टे का सफर विदेशीपन को महसूस करते-करते कब खत्म हो गया, पता ही नहीं चला। गंतव्य पर पहुंच हम सब प्लेटफार्म एक पर लगे लाल झंडे की बगल में कहे अनुसार खड़े हो गए। जैसे ही हम पहुंचे 1 मिनट हुआ, विश्वविद्यालय के छात्रसंघ के प्रतिनिधि हमें लेने आ गए।

फिरंगी सड़कों का पहला अनुभव काफी अद्भुत रहा। सभी लोग ऐसे चल रहे थे मानो किसी रिमोट कन्ट्रोल से दिशानिर्देशित हों। सड़कों पर किसी प्रकार के पशुवरों की अनुपस्थिति काफी आश्चर्यपूर्ण थी। लगा भारत में रह जिस स्वर्ग की कल्पना करते आ रहे थे उसका आगमन हो चुका है। आवास स्थल पहुंच प्रतीत हुआ जैसे कोई अनहोनी हो गई है। वहां के सभी निवासी कहीं कर्फ्यू में नजरबन्द हैं। दूर-दूर तक कोई मनुष्य प्रजाति दिखाई नहीं दे रही थी। कोई चाय पान का ठेला भी नजर नहीं आया जो ये बता देता कि ऐसा सन्नाटा क्यों पसरा है। बातों ही बातों में जान पाया कि सुदूर इलाकों में जनसंख्या घनत्व काफी कम होता है।

हमारा छात्रावास काफी व्यवस्थित था। हर माले पर सर्वसुविधायुक्त एक रसोई मौजूद थी जिसमें आप अपना सामान इस्तेमाल कर जो चाहे वो पका-खा सकते थे। रसोई साफ करने की जिम्मेदारी उस मंजिल पर रहने वाले छात्रों की थी। अगर छात्रावास प्रबंधक रसोई को थोड़ा सा भी गन्दा या अस्त-व्यस्त देख लेता तो तुरंत ही रसोई पर ताला लगा दिया जाता। रसोई का कचरा फेंकने की जिम्मेदारी भी हमारी थी।

शायद अनुशासन ही यह कारण है कि पश्चिमी राष्ट्र हमसे कई वर्ष आगे है। सौभाग्य से हम सभी का कमरा उसी मंजिल पर निर्धारित हो गय। रसोई का काम आपस में बांट लिया गया। भारत की तरह वहां किराने की दुकानें नहीं होतीं। सभी तरह का सामान सुपर मार्केट में उपलब्ध होता है। एक सुपर मार्केट कई एकड़ में फैला होता है। वहाँ सुई से लेकर साईकल तक उपलब्ध होती है।

आने-जाने का साधन न होने के कारण हमें 1 किलोमीटर दूर स्थित मार्केट पैदल जाना पड़ता था। हफ्ते का राशन एक साथ लाया जाता था। वैश्वीकरण का एहसास तब हुआ जब दार्जीलिंग की चाय व बंगाली चावल को फ्रांस के मार्केट की शोभा बढ़ाते देखा। काफी नये तरह के अनुभव रहे। मसलन वहां पानी शराब से महंगा। बाल कतरन की सुविधा 2200/- में। पेशाब करने का किराया 40 रुपये।

बिना इसके मूत्र विसर्जन भी मुश्किल। रोटी की जगह 36 तरह की ब्रेड उपलब्ध। गुसलखाने में पानी की बजाय कागज से जंग। स्नानघर में सिर्फ शावर। बाल्टी और डब्बे का हिसाब-किताब ही नहीं। रात्रि के 10 बजे भी सूरज भगवान आकाश में किसी बिंदु भांति चमक रहे। बस अड्डों पर हर बस के आने का समय अंकित। बस ठीक उसी समय ही आएगी चाहे भूकंप ही क्यों न आ जाए।

-शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन
उदयपुर, शनिवार 01 सितम्बर 2018

सम्पादकीय

भाषा को बचाने की चुनौती

इस समय हमारी सबसे बड़ी और गम्भीर समस्या अपनी भाषा को बचाने की है। यही सबसे बड़ी चुनौती है। दरअसल इस ओर हमने कभी ध्यान ही नहीं दिया। इसलिए भी कि हमने इसे महत्वपूर्ण नहीं माना। नतीजा यह हुआ कि हम बहुत सारी चीजों से हाथ धो बैठे।

आजादी के बाद नई हवा और नई रोशनी में हमने अपने को आधुनिक और अप्टूडेट बनाने के लिए अपने ही घर में अपनी भाषा छोड़ हम-तम की हिन्दी-अंग्रेजी में बतियाना शुरू कर दिया। यह स्वाभाविक तो था पर असल में सोच संगत व्यावहारिक नहीं था। अन्यों के समक्ष हम लघु नहीं लगें, यह भाव हमारे स्वाभाविक स्वाभिमान को तो दरसाता है पर इसके नतीजे ऐसे हो जायेंगे, यह नहीं सोचा गया था।

बहुत सारा पिछला स्थापित अध्ययन और स्थापनाएं-मान्यताएं भी हमारे आधुनिक सोच से प्रभावित हुई हैं। गीता, रामायण और अन्य ग्रन्थ जिन्हें हम धार्मिक मान्यताओं के ही समझते रहे, उनके सम्बन्ध में हमारी धारणाओं के वितान व्यापक बने हैं। कला तथा संस्कृति के अन्त: सम्बन्धों को भी नये रंग से देखा जा रहा है। एक ही रचनाकार की सृजनधर्मिता के माध्यम जुदा-जुदा होते हुए भी उनमें एक सा संवेग और संवेदना का धरातल ध्वनित होने की मूल्यता उभारी जा रही है। पठन और देखन की भेद-दृष्टि में भी अभेद-विभेद की इन्द्रधनुषियां निहारने का कौशल संवर्धित हुआ है।

अब इतिहास भी वह इतिहास नहीं रहा। उसके समकक्ष एक नया मिथकीय इतिहास आ खड़ा हो गया है। वह इतिहास जो अमिट माना जाता था, उसका यह कथन हाशिए पर खड़ा हो गया है। उसकी जगह मिथकीय अवधारणाओं ने ले ली है। यही अवधारणा इस इतिहास के लिए चुनौती बन गई है।

यह भी कि जब सबकुछ नष्ट हो जाता है, कुछ बचता नहीं तब जो मनु बचता है उसके पास भी होता कुछ नहीं पर उसके मस्तिष्क में जो कुछ पुराना और नया चाक्षुष संसार होता है वही मिथक बन जन-जन में व्याप्त होता है। वहां इतिहास मरणासन्न होता है पर लगता है मिथक बचा रहता है।

साहित्य, संस्कृति, कला और जीवनधर्मिता से समृद्ध सारे ज्ञानार्जन भाषा से खिलते-खिलाते मुंह बोले अर्थवान लगते हैं। सच तो यह है कि भाषा है तो सबकुछ है। उसके अभाव में सब गूंगा है। आजादी के बाद हमने बहुत कुछ खोया है। अलग-अलग जातियों के हूनर, हस्त-कौशल और शिल्प जिस त्वरा से ओझल हुए हैं उसकी कल्पना सहज नहीं है। उसके साथ उनकी भाषा जनित अर्थवत्ता भी बुरी तरह लुप्त हो गई है अर्थात् कुछ बचा ही नहीं है और जो कुछ खुरचण रह भी गई उसका गूंगापन उसे भी निरर्थक किये रहता है।

आदिवासी भीलों का गवरी नृत्य प्रारंभ

सवा माह के लिए शिव-पार्वती का धरती पर आगमन

- डॉ. तुक्तक भानावत -

आदिवासी भील जाति उदयपुर जिले में बहुतायत से दिखने को मिलती है। इस जाति में गवरी नामक नृत्यानुष्ठान सैंकडों बरसों से मनता आ रहा है। इसके सूत्र पुराणों में मिलते हैं। गवरी में जो कथा-गाथाएं सुनने को मिलती हैं उनके अनुसार पार्वती धरती पर आती है और धरती पुत्रों को खुशहाली और अमन चैन देकर विदा हो जाती है। इस वर्ष पहली गवरी का मंचन ठंडी राखी पर उदयपुर से 11 किलोमीटर दूर अमरखजी महादेव के प्रसिद्ध मेले से शुरू हुआ। इस मेले में सैंकडों की संख्या में आदिवासी स्त्री-पुरूष एकत्र होते हैं।

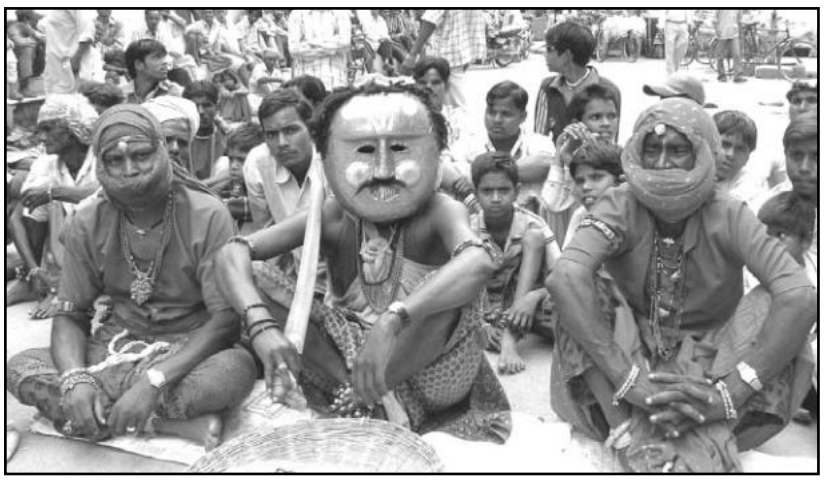

गवरी अध्येता डॉ. महेन्द्र भानावत के अनुसार गवरज्या इनकी प्रमुख देवी है। यह देवी इनके कल्याण तथा मंगल मांगल्य की प्रदात्री है जो सभी प्रकार के संकटों विकटों, रगड़ों झगड़ों तथा दुख: दर्दों से इनकी रक्षा करती है। इसी देवी की आराधना में ये लोग गवरी धारण करते हैं। सुकाल होने पर भील लोग देवी की शरण में जाकर गवरी लेने की इच्छा व्यक्त करते हैं। देवी इनकी भावनाओं के अनुरूप

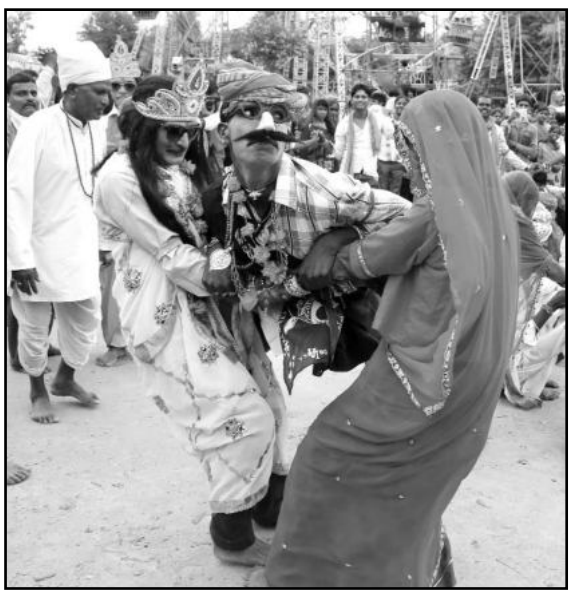

गवरी लेने की इजाजत देती है तब गांव के प्रति घर से एक-एक व्यक्ति गवरी में भाग लेकर सवा माह तक पूरे संयम के साथ गवरी में अभिनय करने निकल जाता है।

इस दौरान सभी गवरी खेलने वाले एक समय भोजन करते हैं। नहाते नहीं हैं। हरी सब्जी का त्याग किये रहते हैं। पांव में जूते नहीं पहनते हैं। मांस मदिरा पान नहीं करते हैं। आंगन पर सोते हैं। हर समय जो कलाकार जिस पात्र का अभिनय करता है वह वही पोशाक पहने रहता है। विश्व में ऐसा स्वांग लीलापरक रूप अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलेगा। एक गवरी में कम से कम 30-40 कलाकार होते ही हैं। गवरी का प्रदर्शन जहां भी चौराहा या खुला स्थान होता है वहां शुरू हो जाता है। यह खेल प्रात: से सायंकाल तक चलता रहता है। इसमें आठ वर्ष से लेकर 80 वर्ष तक के आदिवासी भाग लेते हैं।

गवरी का मूल कथानक शिव-भस्मासुर से सम्बंधित है। इसका नायक राईबूढ़िया है जो शिव तथा भस्मासुर का रूप लिए है। जहां इसकी जटा तथा भगवा पहनावा शिवजी का प्रतीक है वहां हाथ का कड़ा तथा मुखौटा भस्मासुर का द्योतक है। इसकी नायिका राई कहलाती है। ये संख्या में दो हैं। दोनों शिव पत्नियां हैं जो शक्ति और पार्वती का प्रतिनिधित्व लिये हुए हैं। गवरी के पात्र शिवजी के गण हैं जो खेल्ये कहलाते हैं।

नायक राईबूढ़िया महादेव शिव है। यह भीलों का जंवाई है। गवरज्या अर्थात पार्वती भीलों की बहन बेटी है। कैलाश पर्वत से पार्वती अपने पीहर मृत्यु लोक में मिलने आती है। गवरी खेलने के बहाने सवा माह तक अलग-अलग गांव में यह सबसे मिलती है। समय पूरा होने पर आदिवासी हाथी की सवारी के साथ पार्वती को विदा करते हैं। नायक बूढ़िया पूरी गवरी का संचालन करता है। यह गवरी की सीधी गम्मत में नहीं चल कर उसके बाहर-बाहर उल्टे पांव पीछे हटता हुआ गवरी को अनुशासित करता हुआ चलता रहता हैं। राइयां लाल घाघरा, चूनरी, चोली तथा चूड़ा पहने होती हैं। इनका चेहरा कपड़े से बधां रहता है। जो पुरूष के दाढ़ी-मूंछ वाले मर्दानेपन को ढके रखता है। गवरी में सभी पुरूष कलाकार भी होते है। महिला पात्रों की भूमिका पुरूष ही निभाते हैं।

गवरी के प्रत्येक प्रदर्शन के प्रारंभ और अंत में अभिनेता मिलकर गोलाकार नृत्य करते हैं जिसे 'घाई' कहते हैं। गोलाकार पृथ्वी की गोलाई का सूचक है। पृथ्वी के कई नामों में एक नाम गहवरी है जो गवरी का ही द्योतक है। गवरी में देव, दानव, मानव, पशु तथा जलचर पात्रों की अवधारणा मिलती है। गवरी के मुख्य खेलों में बणजारा, हठिया, कालका, कानगूजरी, शंकरियां, कालूकीर, गोमा, चपल्याचोर, देवीअंबाव, खेतुड़ी जैसे कई खेल बड़े मनोरंजक होते हैं।

शिव आदि देव हैं। इन्हीं से सृष्टि बनी। अपनी कला से शिवजी ने धरती आकाश पाताल पेड़ पौधे तथा जीव जंतु पैदा किये। भीलों के अनुसार पृथ्वी पर पहला पेड़ बड़ अर्थात वटवृक्ष सातवें पाताल से लाया गया। देवी अंबाव और उसकी सहेली अन्य देवियों के साथ यह वृक्ष लाया गया और पहली बार उदयपुर के पास प्रसिद्ध रणक्षेत्र हल्दीघाटी के ऊनवा गांव की चट्टान पर स्थापित किया गया। गवरी में जो लंबी गाथा मिलती है उसमें यह सारा वर्णन मिलता है। राईबूढ़िया के रूप में देवों में देव महादेव शिव भेष बदलकर मृत्युलोक में आते हैं और गवरी के नायक के रूप में भाग लेते हैं। इनके साथ शिवजी के गण के रूप में भील अभिनेता भांति-भांति के स्वांग लाकर राह चलते दर्शकों का खासा मनोरंजन करते हैं।

नारायण सेवा पहुंचा बाढ़ प्रभावितों के बीच

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान ने केरल के बाढ़ प्रभावित इलाकों में रहने वाले लोगों की सहायता के लिए खाने के पैकेट और जरूरी राहत सामग्री का वितरण किया। संस्थान की निदेशक श्रीमती वंदना अग्रवाल और एक विशेष टास्क फोर्स टीम ने वाटर बोट के जरिए केरल के दूरदराज के आदिवासी इलाकों में बाढ़ पीड़ितों

के बीच जरूरी सामान का वितरण किया। संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने कहा कि केरल और यहां के लोग भीषण बाढ़ से जूझ रहे हैं। हमारी कोशिश है कि राज्य के दूरस्थ जनजातीय क्षेत्रों में लोगों तक राहत पहुंचाई जाए और पीड़ित लोगों को रोजमर्रा की जरूरी वस्तुएं उपलब्ध कराई जाएं। संस्थान का मकसद ऐसे लोगों की सहायता करना है जो बेहद विषम परिस्थितियों में जीवन बसर कर रहे हैं और इसी सिलसिले में संस्थान की टीम केरल के दूरस्थ जनजातीय क्षेत्रों में पीड़ितों तक पहुंची और उनकी सहायता का प्रयास किया।

हिन्दुस्तान ज़िंक का रिकॉर्ड चांदी उत्पादन

उदयपुर। हिन्दुस्तान ज़िंक के प्रधान कार्यालय सभागार में कंपनी की 52वीं वार्षिक आम बैठक में अध्यक्ष सुनील दुग्गल ने बताया कि वित्तीय वर्ष 2017-18 में ज़िंक का उत्कृष्ट अयस्क, खनित धातु, रिफाइण्ड जस्ता-सीसा एवं चांदी के साथ-साथ सर्वाधिक ईबीआईटीडीए, शुद्ध लाभ, रिकॉर्ड परिचालन तथा श्रेष्ठ वित्तीय प्रदर्शन रहा है। रिकॉर्ड चांदी उत्पादन से ज़िंक अब दुनिया की शीर्ष 10 चांदी उत्पादकों में से एक है। पंतनगर की सिल्वर रिफाइनरी को परिचालन उत्कृष्टकता के साथ सिल्वर की सिल्लियों की उच्च गुणवत्ता के आधार पर लदंन बुलियन मार्केट एसोसिएशन की 'गुड डिलिवरी सूची' में शामिल किया गया है। कंपनी की खदानों से रिकॉर्ड उत्पादन तथा चांदी प्राप्ति के लिए आधुनिक टेक्नोलॉजी से कंपनी का आगामी 3 से 5 वर्षों में विश्व की शीर्ष 5 चांदी उत्पादकों में होने का लक्ष्य है। कंपनी अपनी स्टेऊटजिक विज़न के अनुसार वर्तमान में आउटपुट 0.95 मिलियन टन से बढ़ाकर 1.5 मिलियन टन प्रतिवर्ष करने की ओर अग्रसर है। इसके विस्तार के पहले चरण की मंजूरी मिल गयी है।

स्मृतियों के शिखर (58) : डॉ. महेन्द्र भानावत

जिनके मुख से गो-मुख सी कविता झरती

ऐसे कवि माधव दरक ही हो सकते हैं जिनके मुंह से जहां भी वे जाते हैं, गो-मुख सी कविता झरती रहती है। गो-मुख जहां-जहां भी हैं, वे हमेशा पानीदार बने रहते हैं। समय देने वाली घड़ी चूक जाय पर जलदायक गो-मुख कभी नहीं चूकेगा। कहां से आता है यह जल! घोर गर्मी में भी शीतल और घोर ठंडी में भी पीने लायक मजा देने वाला जल। कोई नहीं जान पाया इस जल के रहस्य को। इसीलिए कहा जाता है, 'जल है तो जीवन है', 'जल है तो कल है', 'जल है तो जहान है।'

ऐसे ही माधव दरक की कविता है। कहां से आती है वह कविता! जैसे तुलसीदासजी के लिए कहा जाता है- 'कविता करके तुलसी न लसै, कविता लसी पा तुलसी की कला।' वैसे ही माधव दरक के लिए एक बार तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य, अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी ने धर्मसभा में उन्हें सुनकर कहा था- 'माधव कविता बोलते नहीं, कविता स्वयं उनके मुंह से प्रखर होती है।'

माधव दरक सहज कवि हैं। जन कवि हैं। जनता जनार्दन के कवि हैं। शहरों में शहरी कवि और गांवों में गांवई कवि। हालांकि उनकी कविताएं वे ही हैं। सुनने वाले वे ही हैं पर जायका अलग-अलग है। यह सब रहस्यमय है। रहस्यमय वह जिसे कोई ठीक से जान नहीं पाये। कवि भी ऐसा ही होता है। हजारों सवाल कवि होने से लेकर कविता करने,सुनाने तक हो सकते हैं मगर कोई ठीक से माकूल जवाब नहीं दे पायेगा, न कवि, न श्रोता, न समीक्षक।

माधव दरक के पास क्या है! जादू किसका है! कवि की रचनाधर्मिता का! कवि की कथनधर्मिता का! कंठ की मधुराई का! उनके अति सहज होने का! एक कवि सबका पसंदीदा कैसे बन सकता है। यहां मुझे माधव दरक की ही तरह एक कवि भावसार बा याद आते हैं जिनकी एक ही कविता- 'मांगीलाल! माजना सूं मंदर में अइजाइजे।' उनसे सैकड़ों बार लोगों ने सुनी होगी। वे भी माधव दरक जैसे ही धोती, कुरताधारी कवि थे पर उनकी वाणी और लहजे में मालवी का घोळ ही सबको लट्टू कर देता था।

कविता झरती है जैसे शिवलिंग पर कपिला गाय का स्वत: स्फूर्त दूध झरता है। जैसे झरमर-झरमर बरसते मेह के बीच इन्द्रधनुष तन आता है। जैसे होले-होले हवा का झौंका किसी अबोध बालिका के गाल पर चिमटी काट जाता है। जैसे गूलर का फूल अचानचक अपना गोड़ फोड़ डाली-डाली फूलवन्ती करता प्रतीत होता है। जैसे कोई देव-शक्ति आह्वान करने-न करने पर भी अपनों के बीच उपस्थिति दे पड़ती है। जैसे किसी के चितारने-न चितारने पर भी हिचकोले खाती हिचकी छविराम हो पड़ती है। जैसे चूल्हे पर रोटी सेकती केलड़ी आग की दंतावली सी मरक-मरक महक मार जाती है। ऐसे ही माधव दरक भी किसी से मिलते-जुलते, बात करते, बतियाते, कुशलक्षेम पूछते कवितामय हो पड़ते हैं। अपनी कविता के साथ लरक पड़ते हैं।

माधव दरक से मेरा कई बार मिलना हुआ। बार-बार मिलना हुआ। कवि मंचों पर भी मिलना हुआ। एक साथ कविता पाठ करना भी हुआ। मैं उनसे सेवा मन्दिर भी मिलने जाता रहा जहां उन्होंने लेखक की हैसियत से 20 वर्ष रहकर पिछड़े तथा अशिक्षित आदिवासी क्षेत्रों में जनजागृति का शंख फूंका और अपने नवसाक्षर गीतों द्वारा विकास की धारा दी। सेवा मन्दिर के संस्थापक प्रख्यात शिक्षाविद् डॉ. मोहनसिंह मेहता के कहने से संस्था गीत लिखा- 'सेवा

मन्दिर का अभियान, जन जागृति का है आह्वान। दीप जलेगा कुटियाओं में। अंधकार का होगा नाश।' ऐसी नवसाक्षर माला के अन्तर्गत 16 पुस्तकें माधवजी द्वारा लिखी गई जो सेवा मन्दिर ने छापी और उन क्षेत्रों में घर-घर पहुंचाई।

अपनी ललाट पर तीन सल लाते, ऊंगलियां घुमाते माधवजी याद करते कहते हैं कि 1980 के प्रारम्भ में उनसे मैंने भेंट की, चेटक सर्कल पर अपने छापाखाना मंगल मुद्रण में। मुझे याद आया उनके साथ उनके छोटे भाई रमेश 'चैतन्य' भी थे, उन्हीं के साथ वे कवि थे। मैंने तब उन्हें राष्ट्रकवि मैथिलीशरण-सियारामशरण की उपमा से सम्बोधित किया था। अब जब देखता हूं तो चैतन्य उनके साथ नहीं है। उनकी कवित्व शक्ति भी शिथिलांचल हो गई पर माधवजी उसी क्रम से श्रेष्ठ से श्रेष्ठतर और अब तो श्रेष्ठतम ही बने हुए हैं।

02 जुलाई 2018 को उसी मंगल मुद्रण की नवीनात्मा बने पार्श्वकल्ला में माधवजी के साथ मैं बैठा हूं। वे कुंभलगढ़ रहते हैं मगर उदयपुर उन्हें पल गया है। सर्वाधिक फल गया है। वे कहीं भी जाते हैं, यह स्थान उनका केन्द्र बन गया है। उन्होंने अपने पहले यादगार कवि सम्मेलन की शुरूआत भी 1956-57 में यहीं से की। उनके पिता काशीरामजी दरक जो वकालात करते लेकिन अच्छे भजन गायक थे। कण्ठ बहुत मधुर था सो सर्वाधिक रूप में तो माधवजी को उनसे कण्ठ ही विरासत में मिला। उतना ही मधुर, मीठागट्ट और भजन का प्रभाव यह रहा कि वैसे ही भावपूर्ण रचनाएं करने का आशिष।

अपनी याददाश्त को खंगालते माधवजी बोले- 'पिताजी के ही प्रताप से बेदला राव मनोहरसिंहजी के माध्यम से 03 जनवरी 1953 को मुझे पीछोला झील में निर्मित लेक पैलेस होटल में मेवाड़ शिरोमणि महाराणा श्री भूपालसिंहजी के दर्शनों का सौभाग्य मिला। वहां महाराणा साहब का पूरा दरबार लगा हुआ था। सभी ठिकानों के सौलह-बत्तीसी सामन्त, उमराव अपनी-अपनी पारम्परिक पोशाकों में सजेधजे थे। वहां का ऐसा परिवेश और शाही ठाठ देख मैं उसी तरह चकित हुआ जैसा सुदामा श्रीकृष्ण की द्वारिका देख हुआ था। वहां मैंने पहली बार अपनी कविता सुनाई जिसके बोल थे-

'मंगरा रे बीच राण कुंभा, कुंभलगढ़
किलो बंधवायो।
म्हेलां पर जोत जला राणा, मुरझित
मनवो हरखायो।।'

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच श्रीजी हुकम ने मुझे इशारा देकर बुलवाया और ढाई सौ रूपया बख्शीश में दिया। तब उन ढाई सौ के सामने, सच कहूं तो आज के ढाई लाख भी फीके लगते हैं। इसे मेरा अहोभाग्य समझिये कि वर्तमान मेवाड़ शिरोमणि श्री अरविन्दसिंह जी 'मेवाड़' की भी मुझ पर वैसा ही कृपा-भाव बना हुआ है। अपने महलों में आमंत्रित कर उन्होंने न केवल मुझसे 'एड़ो म्हारो राजस्थान', 'शिव दर्शन' तथा 'मेवाड़ दर्शन' पर लिखी काव्य-कविताएं सुनीं अपितु इन्हें पुस्तकाकार प्रकाशन भी दिया साथ ही 50-50 हजार की राशि भी भेंट की।'

इसमें संदेह नहीं कि माधवजी अकेले एकमात्र ऐसे सुचर्चित और लोकप्रिय कवि हैं जिन्होंने अपने काव्य-पाठ से पूरे देश में धूम मचा कर जनकवि के रूप में लाख-लाख लोगों के बीच कविताएं सुनाकर अपना प्रतिष्ठित मुकाम बनाया है। दो-दो घंटे तक उनका कई जगह एकल काव्य-पाठ भी हुआ है। उनकी कविताओं का ही यह प्रभाव रहा कि कलकत्ता के कमलकुमार दुग्गड़ ने उनके स्वास्थ्य की शुभकामनाओं खातिर उन्हें ढाई वर्ष तक प्रतिमाह दस हजार रूपये की सहायता राशि भेजी। ऐसा भी हुआ है जब एक प्रताप जयंती पर जोधपुर के बालास गांव के लोगों ने माधव दरक को केवल दर्शनार्थ आमंत्रित किया और खचाखच भरे माहौल में उन्हें मंच पर उपस्थित कर 20 हजार रूपये की राशि भेंटकर धन्य होने का गौरव अर्जित किया।

माधवजी ने बताया कि यह प्रसंग उनके द्वारा प्रताप पर लिखी 'मायड़ थारो वो पूत कठै' नामक कविता से जुड़ा हुआ है। पहलीबार यह कविता उन्होंने उदयपुर की मोती मगरी पर प्रताप जयंती 1996 को सुनाई थी। तब से यह कविता न केवल अपने देश में अपितु विदेशों में भी अधिकांश अनेकानेक लोगों के मोबाइल की रिंग टोन बनी हुई है।

माधवजी ने बताया कि चित्तौड़ में एक बड़े शानदार कवि सम्मेलन में जब कुमार विश्वास, हरिओम् पंवार, अशोक चक्रधर जैसे ख्यातिलब्ध कवि उपस्थित थे तब 15-20 लोग मंच पर आये और उनके साथ बैठे मुझे माला पहनाकर चले गये। इस अप्रत्याशित घटना से मैं चौंक गया। अपने को संभाल नहीं पाया किन्तु वह घटना-प्रसंग मुझे आज भी अजीब कचोटी दिये है। अच्छा तो यह होता कि उन भाई लोगों के साथ मैं होता और हम सब मिलकर अपने अंचल में उन सभी कवि-महारथियों का बड़े ही आत्मीय भाव से भावभीना स्वागत करते।

माधव दरक की एड़ो म्हारो राजस्थान कविता तो इतनी गूंजी कि उस अकेली कविता की स्वर्ण-हीरक जयंती मनाई जा सकती है। तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य तुलसी से लेकर आचार्य महाप्रज्ञ और आचार्य महाश्रमण तक का धर्माशिष माधवजी ने पाया है। उन्होंने आचार्य तुलसी लिखित भारत ज्योति, जैनाचार्य तुलसी तथा आप पधारे जहां तुलसी नामक काव्य कृतियों से जगह-जगह बसे श्रावकों को काव्यामृत से सरोबार किया है। इस धर्मसंघ के श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक मेरे गांव के रहवासी सवाईलाल पोखरना ने माधवजी का मुम्बई धर्मसंघ द्वारा एक लाख ग्यारह हजार एक सौ एक की राशि से जो बहुमान कराया वह तो उनके जीवन की अविस्मरणीय घटना ही बनी हुई है। 'आप पधारे जहां तुलसी' नामक काव्य-कृति तो मैंने ही अपने छापाखाने में प्रकाशित की थी।

माधवजी हाईस्कूल तक पढ़े और फिर 03 जनवरी 1951 को राजकीय शिक्षक बने। वे 1964 तक छात्रों को पढ़ाते रहे। उन्होंने साहित्य रत्न भी किया। वे अपने 1949-50 के उस पठनकाल को भी गहराई से याद करते हैं जब हिन्दी मिडिल की पढ़ाई करते थे। तब हेडमास्टर कालेखां थे। उन्होंने इनका चयन कर भीम में आयोजित मेवाड़ मिडिल टूर्नामेंट में कविता लिखकर दी जिसे माधवजी ने बड़े ही मधुर स्वर में उसका पाठ कर अपनी बुलन्द गायकी से सबको चमत्कृत कर प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। उस कविता की कुछ पंक्तियां मुझे भी उन्होंने बड़े तरन्नुम में सुनाकर पूरा वातावरण ही आह्लादित कर दिया। पंक्तियां थीं- 'प्रकृति छटा है अपार, अति भरमार, यह प्यारा-प्यारा, कुंभलमेर हमारा।'

मैं तो माधवजी की याददाश्त का भी कायल हूं। सैंकड़ों गीत-रचनाएं उन्हें कंठस्थ हैं। वे जब-जब भी मिलते हैं, अपनी ताजी कविता ही सबसे पहले बड़ी ताजगी से सुनाते हैं। उनका स्वर वैसा ही है। लहजा और अदायगी भी वैसी ही है। उम्र ने उन पर कोई प्रभाव नहीं छोड़ा है बल्कि उनका प्रभाव ही उनकी उम्र ने ले रखा है जिससे वह भी अपने प्रवाह का प्रभाव लगती है।

अभी भी उन्हें कविता-पाठ का बुलावा लगातार आता है। वे बालसुलभ छपाकी लिए यथास्थान पहुंच जाते हैं। कविता में मेवाड़ी भाषा का मिठास, भक्तिमती मीरां का ओज एवं प्रताप के शौर्य का उजास श्रोता-समूह में चांदनी सी ताजगी छिटकने की ऊर्जा लिये है।

माधवजी चौरासी वर्ष के हैं। मैं उन्हें कहता हूं, चौरासी कोस की ब्रज भूमि में भी तो माधवजी ने ही प्ररिक्रमा दी है। आप भी मेवाड़ के माधव हैं। माधव रूप में आपकी चौरासी कोसी यात्रा का अभी तो शुभारम्भ हुआ है। यह यात्रा अविराम अभिराम बन चलती रहे।

पेयोनीर की वार्षिक फोरम आयोजित

उदयपुर। वैश्विक ई-कॉमर्स चलाने वाली अभिनव क्रॉस बॉर्डर पेमेंट्स कंपनी पेयोनीर ने मुंबई में अपना पहला और दिल्ली में दूसरा वार्षिक पेयोनीर फोरम समाप्त किया। पेयोनीर फोरम का यह संस्करण 1,000 से अधिक एसएमई और एमएसएमई निर्यातकों, वैश्विक ईकॉमर्स बाजारस्थलों, बैंकों और ईकॉमर्स सेवा प्रदाताओं को एक साथ एक छत के नीचे लेकर लाया। दिनभर चले 'योर पासपोर्ट टू ग्लोबल ईकॉमर्स एक्सपेंशन' नामक इस इवेंट ने भारत के सीमा पार ईकॉमर्स समुदाय को सीखने का अवसर दिया। पेयोनीर के सीओओ केरेन लेवी ने कहा कि हम ऐसी कंपनी बनना चाहते हैं जो भारतीय विक्रेताओं को वैश्विक कदम उठाने और अपने उत्पादों को अधिक अंतरराष्ट्रीय बाजारों में बेचने में सक्षम बनाती है। भारत हमारे लिए एक रणनीतिक बाजार है, जहां विक्रेता हमारे काम का मुख्य केंद्र है। हम एक जटिल क्षेत्र में महान तकनीक और एक शीर्ष ग्राहक अनुभव प्रदान करने के लिए प्रयासरत हैं। मुख्य वक्ता, पेयोनीर के एपीएसी प्रमुख, पैट्रिक डी कोर्सी ने कहा कि भारत में एमएसएमई को वैश्विक स्तर पर व्यापार के विस्तार के लिए बहुत अवसर हैं।

उभरते बिज़नेसों के लिए 'ग्रोथ मैटर्स अभियान'

उदयपुर। स्पा इंडिया ने फेडरेशन ऑफ राजस्थान ट्रेड एण्ड इंडस्ट्री (फोर्टी) उदयपुर डिवीज़न के सहयोग से 'डेयर टू ड्रीम' अवार्ड्स द्वारा उदयपुर में उभरते बिज़नेसों के लिए 'ग्रोथ मैटर्स अभियान' के अगले चरण की घोषणा की। इस प्लेटफॉर्म का उद्देश्य उदयपुर के संस्थानों व नायकों को पहचान कर सम्मानित करना है जिन्होंने अपने उद्योगों में उल्लेखनीय सफलता अर्जित की है। ग्रोथ मैटर्स नेटवर्क स्मॉल एवं मिड मार्केट बिज़नेस टॉपिक्स का बहुआयामी समुदाय है और इसका उद्देश्य बिज़नेसों को औद्योगिक नेतृत्वकर्ताओं के साथ नेटवर्क एवं वैचारिक प्रक्रिया में संलग्न करना है। प्रवीण सूथर प्रेसिडेंट फोर्टी उदयपुर डिवीज़न ने कहा कि डेयर टू ड्रीम बिग अवार्ड बिज़नेसों को खुद के द्वारा किए जाने वाले अद्भुत कार्यों के प्रदर्शन में मदद करेंगे, तथा दूसरों को उनके अनुभवों से सीखने और सर्वश्रेष्ठ अभ्यास अपनाने का अवसर मिलेगा।

मोबाइल रिपेयरिंग प्रशिक्षण सम्पन्न

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान द्वारा हिरण मगरी, सेक्टर-4 के मानव मन्दिर एवं लियों का गुड़ा स्थित सेवा महातीर्थ परिसर में दिव्यांग व निर्धनजन के लिए चलाए जा रहे 35 दिवसीय नि:शुल्क मोबाइल रिपेयरिंग प्रशिक्षण के दो बैच का समापन हुआ। निदेशक वंदना अग्रवाल ने 28 प्रशिक्षण प्राप्तकर्त्ताओं को प्रमाण पत्र व रिपेयरिंग उपकरण के किट नि:शुल्क प्रदान किए। इस अवसर पर प्रशिक्षण प्रभारी व परियोजना अधिकारी नितीन पालीवाल भी उपस्थित थे।

कैण्डी 'पल्स लीची' लॉन्च

उदयपुर। पास-पास पल्स एक नए और बेहतरीन फ्लेवर 'पल्स लीची' को लेकर मार्केट में उतरा है। पास-पास पल्स लीची के साथ, कन्फेक्शनरी उत्पाद श्रेणी के पूर्व और अधिक सफलतम फ्लेवर्स कच्चा आम, ग्वावा, संतरा और पाइनेपल का विस्तार हुआ है।

डीएस ग्रुप के न्यू प्रॉडक्ट डवलपमेंट विभाग के वाइस प्रेसीडेन्ट शंशाक सुराना ने कहा कि हमारे सारे प्रयासों का मूल उपभोक्ताओं की संतुष्टी है। पल्स कैंडी के द्वारा हम ग्राहकों को न केवल आनंददायक व स्वाद से परिपूर्ण अनुभूती कराना चाहते हैं बल्कि , उम्मीदों से बढ़कर एक खरा उत्पाद भी देना चाहते हैं। आशा है कि पल्स लीची एक मजेदार और स्वादिष्ट फ्लेवर साबित होगा। नई पल्स लीची एक रूपये मूल्य के पिलो पैक में उपलब्ध होगी।

ऑटम विंटर कलेक्शन पेश

उदयपुर। यू.एस. पोलो एसोसिएशन इस सीज़न में वार्डरोब की शोभा बढ़ाने वाले उभरते हुए रंगों और विरोधाभासी शेड्स के आकर्षण मिश्रण के साथ ऑटम विंटर कलेक्शन अधिकृत अमेरिकी फैशन को वापस लाने के लिए तैयार है। यू.एस. पोलो एसोसिएशन स्पोर्टी डिजाइनों और आकर्षक रंगों के साथ इस सीज़न को नए सिरे से परिभाषित करता है। ऑटम विंटर कलेक्शन इस सीजन के लिए आकर्षक परिधानों की पेशकश करता है।

ऑटम विंटर कलेक्शन की कीमत 699 से 7499 रु है और इसे देशभर में सभी यू.एस. पोलो एसोसिएशन स्टोर्स पर उपलब्ध कराया गया है। ब्रांड के प्रीमियम कलेक्शन में एक और आकर्षण के तौर पर चिनोज़ की विस्तृत रेंज शामिल है। इसमें खाकी, स्मार्ट कैजुअल और प्रिंटेड चिनोज़ प्रमुख हैं। यू.एस. पोलो एसोसिएशन के ट्राउज़र्स बेहतर ब्रीदेबिलिटी के साथ-साथ शानदार हैंड-फील भी दिलाते हैं।

स्वच्छता ही सेहत की कुंजी : चौबीसा

उदयपुर। नियमित स्वच्छता ही सेहत की कुंजी है। इसे दैनिक रूप में अपनाया जाना चाहिये। साथ ही बालिकाओं को व्यक्तिगत स्वच्छता के प्रति जागरूक कर उपलब्ध संसाधनों का अधितम उपयोग किया जाना चाहिये।

ये विचार सर्वशिक्षा अभियान के अतिरिक्त परियोजना अधिकारी मुरलीधर चौबीसा ने व्यक्त किये। वे राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिसर, नेशनल स्टॉक एक्सचेंज फाउंडेशन, यूनिसेफ, सेंटर फॉर एनवायरनमेंट एजुकेशन एवं अलर्ट संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में विद्या भवन कृषि विज्ञान केंद्र में आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला में बोल रहे थे।

इस कार्यक्रम में जल, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य हेतु गतिविधियों द्वारा कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की प्रधानाचार्या, वार्डन एवं रिसोर्स पर्सन को संबंधित जानकारी दी गई। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बालिकाओं में स्वच्छता हेतु उचित व्यवहार एवं बदलाव को लाने हेतु शिक्षकों को प्रशिक्षित करना था। इस हेतु प्रतिभागियों द्वारा रिसोर्स मैपिंग, दृश्यीकरण एवं माइक्रो प्लानिंग की गई। साथ ही मैं कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में वॉश से संबंधित कार्यविधियों पर विस्तृत रूप से जानकारी दी गई। विद्यालय में वॉश शिक्षण हेतु बाल संसद को सशक्त करने हेतु प्रक्रियाओं पर चर्चा की गई। कार्यशाला सीईई अहमदाबाद के बीजोय, प्रियंका, अनुराग एवं अलर्ट संस्थान के अध्यक्ष जितेन्द्र मेहता के नेतृत्व में आयोजित की गई। इस अवसर पर बीके गुप्ता भी उपस्थित थे। कार्यशाला में राजसमंद एवं उदयपुर के 40 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।

जॉली रैन्चर हॉटीज़ लॉन्च

उदयपुर। हर्षीज इंडिया प्रा. लि. ने जॉली रैन्चर 'हॉटीज़' को लॉन्च किया है जो 'हॉट' स्वाद पसंद करने वालों के लिए खासतौर पर तैयार की गई एक हार्ड कैंडी है। यह कैंडी जॉली रैन्चर कन्फेक्शनरी रेंज का हिस्सा है, जो अपने बेहद सटीक, बोल्ड, मीठे और फलों के खट्टे स्वाद के लिए जाना जाता है। उपभोक्ताओं को पहले फलों के स्वाद का अनुभव होता है, और फिर बीच से अचानक मिर्च का विस्फोट होता है, इस प्रकार मीठे और मसाले, दोनों का मिलाजुला स्वाद देर तक बरकरार रहता है। कैंडी कच्चे आम, अनानस, और नींबू फ्लैवर में एक रुपये में उपलब्ध है।

हर्षी इंडिया प्रा. लि. के प्रबंध निदेशक हरजीत भल्ला ने कहा कि हर्षी इंडिया अपने प्रोडक्ट पोर्टफोलियो का लगातार विस्तार कर रहा है। हमने भारतीयों की पसंद का पता किया, तो पाया कि वे मीठे की तरह तीखे और चटपटे स्वाद को भी उतना ही पसंद करते हैं। जॉली रैन्चर हॉटीज़ के लॉन्च को लेकर हम बेहद उत्साहित हैं, क्योंकि एक ही प्रोडक्ट में 'मीठा' और 'तीखा' दोनों स्वाद उपलब्ध है। जॉली रैन्चर हॉटीज़ का विज्ञापन सेलिब्रिटी तमन्ना भाटिया द्वारा किया जाएगा। तमन्ना भाटिया ने कहा कि जॉली रैन्चर हमेशा से मेरा पसंदीदा रहा है, और मैं अमेरिका से यहां आने वाले अपने दोस्तों या रिश्तेदारों का बेसब्री से इंतजार करती थी, ताकि वो जॉली रैन्चर ला सके। मैं भारत में जॉली रैन्चर हॉटीज़ के लॉन्च को लेकर बेहद उत्साहित हूँ और इस ब्रांड का हिस्सा बनने के लिए उत्सुक हूँ।

फ्लाइंग मशीन AW18 कलेक्शन की पेशकश

उदयपुर। अरविंद लाइफ स्टाइल ब्रांड् लि. ने अब नि:सन्देह बिंदास और स्पष्ट तौर पर यूथफूल ब्राण्ड फ्लाइंग मशीन **AW18** कलेक्शन् की पेशकश की है। यूथ के पर्याय रहे इस ब्राण्ड में नवीनतम डिजाइन के साथ अत्याधुनिक फैशन को समाहित किया गया है। फ्लाइंग मशीन के नवीनमत कलेक्शन में मोनोक्रोमैटिक जीन्स, शर्ट और टीज़ की व्यापक रेज उपलब्ध है। यह 399 से 3399 रुपये में उपलब्ध है।

अरविंद लाइफ स्टाइल ब्रांड्स लि. के 'लाइफस्टाइल ब्रांड्स डिविजिन' के मुख्य कार्यकारी अधिकारी आलोक दूबे ने कहा कि नए कलेक्शन के साथ हमारी डिजाइन टीम ने फैशनेबल ट्रेंड्स के साथ बिंदास कूलस्टाइल का सही मेल को बेहतरीन कीमत में पेश किया है, जो भारतीय युवाओं के लिए एकदम उपयुक्त है।

एरिस्टोक्रेट हाइक और पीक के साथ रकसैक श्रेणी में प्रवेश

उदयपुर। एरिस्टोक्रेट, वी.आई.पी इंडस्ट्रीज का वैल्यू ब्रांड, भारत की अग्रणी लगेज कंपनी हाइक और पीक के साथ रकसैक की रोमांचक श्रेणी में प्रवेश किया है। नए लॉन्च किए गए कलेक्शन में स्मार्ट डिजाइन है, जो परिष्कृत चमकदार लुक के साथ आता है। वीआईपी इंडस्ट्रीज के सीईओ सुदीप घोष ने कहा कि 45लीटर की उत्कृष्ट क्षमता, सभी प्रकार के एडवेंचर के लिए कलेक्शन को आदर्श बनाती है। प्रीमियम चमकदार कपड़े से बनाए गए, रकसैक काले और भूरे रंगों में उपलब्ध हैं। रकसैक को संयोजित रखने के लिए अतरिक्त जूतों का बड़ा कम्पार्टमेंट के साथ सामने की जेब और साइड की जिपर जेब के अलावा तीन शानदार कम्पार्टमेंट हैं। इन्हें 17'' का लैपटॉप रखने के लिए बिना त्रुटि के डिजाइन किया गया है। इसके अलावा, अत्यधिक यात्रा-अनुकूल रकसैक अन्य आवश्यक सुविधाओं से भी लैस हैं, जिनमें दोनों तरफ लंबी नेट की जेब और संपीड़न पट्टियां शामिल हैं, अतिरिक्त सुरक्षा के लिए एक आयोजक और नीचे की ओर लग्स लगे हुए हैं। शुरुआती प्रस्ताव के रूप में, दोनों बैगों की कीमत 2000 रूपये से कम है।

एचडीएफसी लाइफ क्लासिक वन प्लान लॉन्च

उदयपुर। एचडीएफसी लाइफ इंश्योरेंस कंपनी जो कि भारत की सबसे बड़ी प्राइवेट लाइफ इंश्योरेंस कंपनियों में से एक हैं, ने एचडीएफसी लाइफ क्लासिक वन, सिंगल प्रीमियम यूलिप प्लान लॉन्च किया।

यह प्लान लाइफ कवर के रूप में वित्तीय सुरक्षा के साथ संभावित रूप से हाई रिटर्न के दोहरे फायदे देता है। एचड़ीएफसी लाइफ के सीनियर ईवीपी, चीफ एक्चुअरी एंड अपॉइंटेड एक्चुअरी श्रीनिवासन पार्थसारथी ने कहा कि एचडीएफसी लाइफ क्लासिक वन निवेशकों को सिंगल-प्रीमियम भुगतान के माध्यम से बाजार से जुड़ी योजना में निवेश करने का विकल्प प्रदान करता है और लंबे समय के लिए निवेश जारी रखता है। यह पॉलिसीधारकों को संपूर्ण डेट (ऋण), इक्विटी और बैलेंस्ड फंड प्लेटफॉर्म के साथ नौ फंड विकल्प प्रदान करता है। यह अनोखा प्रोडक्ट फंड के बीच अनलिमिटेड फ्री स्विच की अनुमति भी देता है, जिससे ग्राहकों को अपने निवेश को बढ़ाने की सुविधा मिलती है। एचडीएफसी लाइफ के प्रोडक्ट सुइट में ट्रेडिशनल, यूलिप, पेंशन और हेल्थ केटेगरी शामिल हैं जिन्हें भारतीय ग्राहकों की तेजी से बदलती जरूरतों को पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया है।

खबरों में अच्छी.....

(पृष्ठ एक का शेष)

पारंपरिक अमरसिंह राठौड़ नामक कठपुतली खेल को नवीन भव्य परिवेश देकर मुगल दरबार की रचना की जिसने रूमानिया के अंतर्राष्ट्रीय कठपुतली समारोह में प्रस्तुत कर सर्वश्रेष्ठता का पुरस्कार पाया।

लोककला संग्रहालय प्रारंभ किया। लोकाधारित विविध नृत्य-नाट्यानुरंजन से संबद्ध करीब 30 पुस्तकें तो कलामंडल से ही मेरी प्रकाशित हुईं। 1995 में वहां से सेवामुक्त होने के बाद मेरा इसी क्षेत्र का यह कार्य कई गुना विकसित होकर अब भी निरतंर है। एक सौ के करीब पुस्तकों के प्रकाशन के उपरांत भी यही लग रहा है कि अभी तो मैंने जैसे कार्य प्रारंभ ही किया है।

गवरी को और पीछे जाकर देखूं तो जब मैं चौथी में पढ़ता था तब बुखार से अति पीड़ित हो गया था। तब आज की तरह अस्पताल और डाक्टर तो थे नहीं। अड़क इलाज ही की शरण लेनी पड़ती थी। मेरी पिरोल में सात विधवाओं का बसेरा था। स्वयं मेरे अपने परिवार में भी मां और हम बच्चे ही थे। वहां रह रहे बहरे माऊ और अंधी चन्दरी भुआ से मेरी तरसना देखी नहीं गई। उन्हीं दिनों रावले में राई नाच रही थी सो उनके कहने पर मां मुझे मोटे रेजे का पछेवड़ा ओढ़ाकर रावले ले गई।

वहां देवी अंबाव के वाहन नार का बड़ा ही आकर्षक स्वांग खेला जा रहा था। मां ने मुझे उस शेर बने कलाकार के नीचे से निकाला। वह कलाकार निरंतर अपने पूरे शरीर से उसी तरह की कंपकंपी दे रहा था जैसे मैं बुखार से पीड़ित पूरे शरीर में धूजणी लिये था। शेर बना वह कलाकार बड़ी हट्टीकट्टी काया लिये था। चारों ओर अपनी डरावनी नजर किये उसकी दहाड़ देती जीभ लपलपा रही थी और वह अपने पूरे नंगे शरीर पर शेर सा ही मेकअप किये था। वैसा खूंखार किंतु चित्ताकर्षक शेर उसके बाद की किसी गवरी में मुझे देखने को नहीं मिला।

आलम यह हुआ कि घर पहुंचते-पहुंचते ही मेरा ताव जाता रहा और जहां तक याद पड़ता है, उसके बाद मैंने अपने पर कभी कोई बुखार हावी नहीं होते पाया। बुखार तो चला गया मगर बुखार की जगह मेरे अवचेतन में गवरी ने ऐसा मुकाम बना डाला कि वह अब भी राजीखुशी मुझमें पैठी हुई है।

सन् 1965 में गवरी संबंधी अपनी शोधयात्राओं के दौरान मैंने समस्त पंच गिर्वा की ओर से एक छपा हुआ परचा देखा। यह परचा इस प्रकार था-

गिर्वा गमेती भाइयों से निवेदन

गांव गिर्वा के गमेती भाइयों! आपको यह तो मालूम ही था कि जिस समय आयड़ गांव के गंगू पर गमेती जाति की बैठक रखी थी, उसमें गिर्वा व अन्य गमेती भाइयों ने यह तय किया कि कांग्रेस सरकार हमारे सामाजिक जीवन को, तन,मन,धन द्वारा ऊंचा उठा रही है और इस तरह से हमारी सहायता व मदद कर रही है। पर हम लोग अभी गहरी नींद में सोये हुए हैं। न हमें अभी तक अच्छा जीवन बिताने का ढंग मालूम है।

हमारे दिमागों में प्राचीन बुद्धि पड़ी हुई है और हमारा सारा समय यों ही बीत जाता है। इस बात को सरकार ने ध्यान में रखकर हमारी भलाई के लिए गवरी नृत्य बन्द कर दिया, इसमें हमें खुशी है क्योंकि हम महीने भर इधर-उधर मारे-मारे न फिर कर एक जगह बैठकर अपने काम में लगे रहें। इस विषय पर समस्त गमेती भाइयों ने ही बैठक बिठाकर यह तय किया कि गवरी नहीं लेंगे पर पंचों की बिना आज्ञा से गोर्द्धनविलास वाली देवाली में गमेती भाइयों ने गवरी ली। यह हमारी गमेती जाति के लिए शर्म की बात है। हम गिर्वा गांव के समस्त गमेती भाई सभी भाइयों से यह प्रार्थना करते हैं कि इस बात को ध्यान में रखते हुए उनका जाति-व्यवहार, लेन, देन, साड़ी, कपड़ा, पहरावणी आदि बन्द किये जाएं। अगर कोई जाति भाई पहरावणी व लेनेदेन करता हुआ हमारी नजर में या दूसरों की नजर में दिखाई दिया तो उस पर 500.00 रूपया जुर्माना और 12 वर्ष तक उसका जाति व्यवहार बन्द रहेगा।

विनीत

दिनांक 10-9-65 समस्त पंच गिर्वा

इन दिनों मेरे लिए सबसे अच्छी खबर यह है कि उदयपुर जिला प्रशासन गवरी को राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाने के लिए कृत संकल्पित है। गवरी के माध्यम से कला एवं सामाजिक सौहार्द्र के संदेशों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए विविध टॉक शो एवं पाठ्यक्रम में शामिल किये जाने का मन बनाया जा रहा है। गवरी को एक वार्षिक उत्सव के रूप में स्थापित करने एवं रूरल ट्यूरिज्म को बढ़ावा देने, गवरी कलाकारों को पहचान दिलाने, उनका अलग से डेटाबेस तैयार करने, इसे अधिकाधिक लोकप्रिय बनाने के लिए वेबसाईट एवं सोशल मीडिया के जरिये व्यापक प्रचार करने को विभिन्न सरकारी विभाग, व्यावसायिक प्रतिष्ठान, शिक्षा तथा सांस्कृतिक केन्द्र एवं स्वयंसेवी संगठनों के सक्रिय सहयोग को व्यावहारिक चिंतना दी जा रही है।

आईआईटी बोम्बे में अध्ययनरत शब्दांक भानावत एवं उज्ज्वल सोनी अपनी जोड़ीदार के साथ नाट्य प्रस्तुति में।

बहनों के वीर

बहनों के वीर !
रक्षा पर्व पर
राखी माँग रही
रक्षा कवच
घर आँगन से
लोकगीतों में पीर
बाँचने वाले
बाट के बटोहियों से
जागरूक विधायिका से
कार्यपालिका से
न्यायपालिका से
संचार माध्यमों से
कुर्सियों से
संरक्षण गृहों से
उन्हें केवल
आश्वासन नहीं,
विश्वास चाहिए।

-डॉ. विद्याविन्दुसिंह

भारतीय इतिहास दृष्टि और सिन्धु दर्शन का लोकार्पण

नई दिल्ली में राजस्थान क्षेत्रीय सहसंगठन मंत्री छगनलाल बोहरा द्वारा लिखित 'भारतीय इतिहास दृष्टि और सिन्धु दर्शन' का लोकार्पण राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सह सरकार्यवाह सुरेशजी सोनी द्वारा किया गया। समारोह में इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष मूर्धन्य इतिहासकार डॉ. सतीशचन्द्र मित्तल, राष्ट्रीय संगठन मंत्री डॉ. बालमुकुन्द पाण्डे, राष्ट्रीय महासचिव डॉ. ईश्वरशरण विश्वकर्मा, डॉ. के. एस. गुप्त, डॉ. महावीरप्रसाद जैन तथा देशभर से आए हुए इतिहासकार उपस्थित थे।

इस अवसर पर श्री सोनी ने कहा कि इतिहास का अध्ययन, लेखन, पठन, पाठन एवं पुरुषार्थ चतुष्टम की साधना के लिये होना चाहिये। केवल घटनाओं और तिथियों का संकलन मात्र इतिहास नहीं है। देश के युवकों का चरित्र उज्ज्वल बने। उनमें राष्ट्र गौरव का भाव बढ़े। साथ ही धर्मार्थ काम मोक्षाणाम् उपदेश समन्वितम की इतिहास दृष्टि होनी चाहिये। डॉ. पाण्डे ने कहा कि इतिहास लेखन के स्त्रोतों में यात्रा-वृतान्तों का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। इत्सिंग, ह्वेनसांग, फाह्यान के लिए यात्रा-विवरण महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्त्रोत हैं। इस क्षेत्र में कार्य करने वालों की दृष्टि हर समय, इतिहास की शोध-खोज और नवीन तथ्यों के अन्वेषण के प्रति जागरूक होना चाहिये।

पुस्तक लेखक श्री बोहरा ने अपनी लेह-लद्दाख और सिन्धु दर्शन यात्रा को इतिहास की पुनरावलोकन यात्रा बताते हुए अपने यात्राजनित अनुभवों से सबको लाभान्वित किया। डॉ. मित्तल ने लोकार्पण पुस्तक को यात्रा-वृतान्त की एक महत्वपूर्ण कड़ी बताते हुए बोहराजी के प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। समारोह में डॉ. ईश्वरशरण विश्वकर्मा, डॉ. के. एस. गुप्त, जानकीनारायण श्रीमाली, महावीरप्रसाद जैन आदि ने भी विचार व्यक्त किये।

पेरिस में पांच.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

विदेश यात्रा व्यक्ति को न केवल सिखाती है परंतु उसे भविष्य के लिए तैयार भी करती है। यह सिखाती है कि अपनेआप को स्थिति के अनुकूल बनाना किस हद तक आवश्यक है। अगर आप वर्तमान में प्रासंगिक नहीं रहेंगे तो भविष्य आपके हाथों में नहीं आ पायेगा।

विश्वविद्यालय परिसर में पहला दिन काफी उत्साहजनक रहा। आठ मंजिल का परिसर अपनेआप में किसी पांच सितारा होटल से कम नहीं लग रहा था। परिसर में घुसते ही एक बड़े से इलेक्ट्रॉनिक बोर्ड पर हर विषय की कक्षा का समय व जगह हर सेकंड चमक मार रही थी। अंदर छात्रों की रेलमपेल किसी व्यस्त बाजार सा आभास दे रही थी। मेरी पहली कक्षा मानव संसाधन विकास पर थी।

अध्यापिका दक्षिण कोरिया से थी जो बड़ी दिक्कतों से अंग्रेजी कह व समझ पा रही थी। हम भारतीयों का उच्चारण-लहजा काफी अक्खड़ होता है। कक्षा में बोलते वक्त उसे हमारी भाषा समझने में काफी मुश्किल का सामना करना पड़ रहा था। शिक्षा का स्तर निसंदेह भारत के उच्च शिक्षा संस्थानों के समकक्ष था। हमें किसी भी प्रकार की समस्या नहीं हुई। भारत में रहकर जैसे हम अपने विषय को पढ़ते, समझते रहे वैसा ही हमें वहां लगा किंतु सबसे बड़ा फर्क यह था कि वहां कक्षा में पूरे विश्व-पटल से छात्र पढ़ने आये हुए थे।

पहले दिन मेरे समूह में मेरे अलावा पांच छात्र अर्जेंटीना, चेक, रोमानिया एवं जापान से थे। उनके साथ होना अपनेआप में एक बेहतरीन अनुभव था। हाथ के हाथ हमारी दोस्ती हो गई और संध्या को हमने उन्हें अपने छात्रावास में भारतीय खाने पर आमंत्रित भी कर लिया। इस घटना पर एक बेहद मजाकिया वाकिया हुआ जिसे मैं शायद ही भूल पाऊंगा। हम सब रसोई में बैठे हुए खाने की तैयारी कर रहे थे। मैंने दाल बना ली थी और पुलाव कुकर में पकने को रखे थे। कुकर एक ऐसा अविष्कार है जो मात्र भारतवर्ष में पाया जाता है। पश्चिमी देशों के लोग अमूनन इस क्रांतिकारी उपकरण से अनभिज्ञ होते हैं। जैसे ही कुकर की सीटी बजी वैसे ही हमारे जापानी बंधुवर रसोई से चिल्लाते हुए बाहर की ओर भाग उठे और सभी को बाहर आने का निवेदन यह कहकर करने लगे कि यह उपकरण फुट जाएगा। देखते ही देखते हम पांच को छोड़ सभी बाहर गलियारे में खड़े थे। बहुत जल्दी सभी से बहुत घुलमिलाहट हो गई व संस्कृति का आदान-प्रदान सुचारू रूप से होने लगा। मुझे फैंच टोस्ट व फैंच क्रेप बनाना भी आ गया था। दिन का खाना नीम्बू की चाय व मफिन के साथ होने लगा। अपने पांच महीनों के प्रवास में हमने लगभग पूरा यूरोप नाप डाला। स्पेन से लेकर हंगरी व मोंटे कार्लो से लेकर नीदरलैंड तक हम वहां किसी घुमक्कड़ प्रजाति की तरह घूमते रहे।

यूरोप पर कुछ लिखने के लिए कुछ पृष्ठ काफी नहीं हैं। एक पूरी किताब भी कम है क्योंकि यूरोप भी हिंदुस्तान की तरह विभिन्न सभ्यताओं व संस्कृतियों का मिलन है और इसे समझने के लिए एक भारतवर्षी को ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। सेंट आगस्टीन ने सही ही कहा है -'दुनिया एक किताब है। जो यात्रा नहीं करते वो पहले पृष्ठ पर ही बैठे हैं।'

हेमजीत मालू मोरिशस में सम्मानित

भारतीय भाषा एवं संस्कृति संगम भारत द्वारा मोरिशस में आयोजित 'अन्तर्राष्ट्रीय विश्व हिन्दी सम्मेलन' के अवसर पर हिन्दी भाषा में कला, संस्कृति, साहित्य एवं पर्यटन की गतिविधियों को प्रोत्साहित एवं प्रचारित करने हेतु हिन्दी मासिक पत्रिका

'स्वर सरिता' के प्रबन्ध सम्पादक हेमजीत मालू को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। मोरिशस में श्री मालू को यह सम्मान भारत में मोरिशस के राजदूत जगदीश्वर गोवर्धन, गुरू अरविन्द, चन्द्रप्रकाश गुसाई एवं प्रेमचन्द्र बुझावन के कर कमलों द्वारा प्रदान किया गया है। इस अवसर पर 'स्वर सरिता' के अगस्त 2018 अंक को लोकार्पित भी किया गया।

कविता और राजनीति दो नावों के सशक्त खिवैया थे बालकवि बैरागी

बालकवि बैरागी ने कविता और राजनीति के दो घोड़ों पर निर्द्वन्द्व तथा सरपट सवारी की किन्तु न घोड़ों पर कभी खरौंच आने दी और न अपने पर ही किसी खरौंच का दाग लगने दिया। इनमें भी साहित्य के प्रति उनका अहर्निश अथक समर्पण रहा। ये विचार नीमच में शिक्षण संस्थान ज्ञानोदय तथा साहित्य संस्था कृति द्वारा आयोजित समारोह में लोककलाविद् डॉ. महेन्द्र भानावत ने व्यक्त किये। समारोह में प्रख्यात राजनीतिक विश्लेषक एवं साहित्यसेवी डॉ. वेदप्रताप वैदिक तथा डॉ. भानावत ने बालकवि के अनन्य साथी रहे मालवी के लोकसाहित्यविज्ञ डॉ. पूरन सहगल लिखित 'वामन से विराट' नामक पुस्तक का लोकार्पण किया।

डॉ. भानावत ने बालकवि से पिछले 45 वर्षों के जुड़ाव का जिक्र करते कहा कि बालकवि कविता को अपना संस्कार और सिर की पाग तथा राजनीति को पद रक्षक पगरखी मानते थे और कहा करते थे कि पाग की इज्जत के लिए यदि जूती भी हाथ में लेनी पड़े तो वे हिचकेंगे नहीं किन्तु पगरखी के कारण पाग हाथ में लेकर अपनी इज्जत को दाग नहीं लगने देंगे।

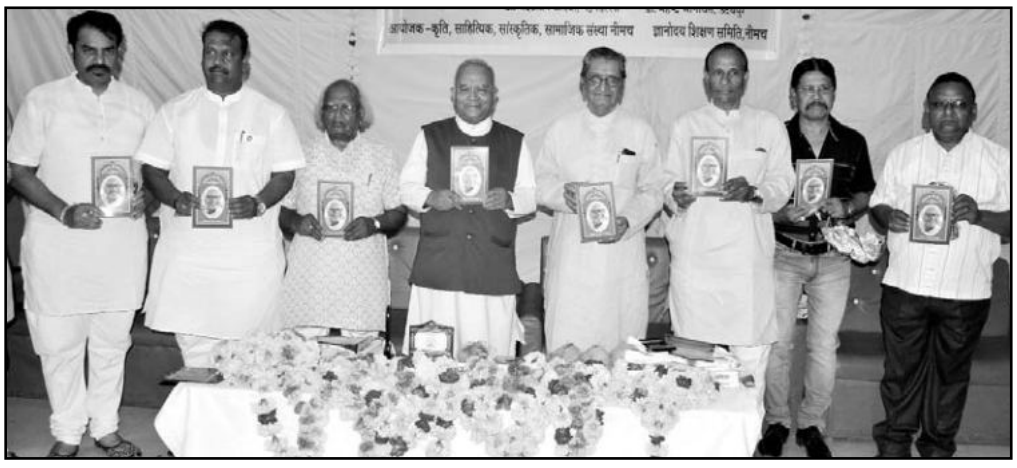

डॉ. भानावत ने वर्षों पूर्व बालकवि बैरागी लिखित 'मंगते से मिनिस्टर' तथा 'मिनिस्टर से मनुष्य' नामक अप्रकाशित पाण्डुलिपियों का प्रकाशन करने पर बल दिया और कहा कि जो भी कारण रहे हों पर अब बालकवि के स्मृतिशेष होने पर उनका प्रकाशन देश की राजनीति में भूचाल के साथ शुचिता लाकर नये भारत के निर्माण का नया इतिहास लिखने के लिए प्रेरक होगा। यही नहीं, उन्होंने अपने जीवनकाल में लगभग एक लाख पत्र लिखे। यदि उनका भी प्रकाशन होता है तो शिक्षा, साहित्य, राजनीति तथा जीवनधर्मिता के विविध क्षेत्रों में उनके विचारों से खासकर नई पीढ़ी को अपने जीवन निर्माण का बड़ा संबल मिलेगा।

समारोह में डॉ. वैदिक ने बालकवि को अपना अद्भुत साथी बताया और उनके साथ के अनेक संस्मरणों का जिक्र किया। डॉ. सहगल ने बैरागीजी के अन्तरंग जीवन को खंगालते हुए उनकी स्नेहशील सौहार्द्रमयी प्रकृति को रेखांकित करते उन्हें श्रेष्ठतम मंचीय कवि, सफलतम गीतकार, कहानीकार एवं संस्मरण धनी उपन्यासकार सिद्ध किया।

समारोह में उपस्थित बालकवि के सुपुत्र सुशीलनंदन बैरागी ने डॉ. भानावत को बताया कि पिताश्री के नाम से एक ट्रस्ट का निर्माण कर प्रतिवर्ष विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धिमूलक योगदान देने वाले विद्वानों, छात्रों तथा उदीयमान कृषकों को पुरस्कृत किया जाएगा।

इससे पूर्व अपरान्ह में ज्ञानोदय संस्थान के अनिल तथा डॉ. माधुरी चौरसिया दम्पती द्वारा संचालित बालकवि बैरागी महाविद्यालय में आयोजित समारोह में डॉ. वैदिक तथा डॉ. भानावत ने शिक्षा क्षेत्र में नवाचार तथा नवीन शोध दृष्टि पर सारगर्भित विचार व्यक्त किये। डॉ. माधुरी ने बालकवि बैरागीजी से संबंधित शिक्षापयोगी साहित्य प्रकाशन में ज्ञानोदय के योगदान की चर्चा की।

निर्माण गुणवत्ता का नया माइल स्टोन है आर्चीज टाउनशिप : सांसद जोशी

उदयपुर। मुख्यमंत्री जन आवास योजना के तहत बनाई जा रही आर्चीज गैलेक्सी टाउनशिप निर्माण गुणवत्ता में नया माइल स्टोन है। सर्वोत्तम गुणवत्ता का आवास दिलाने का संकल्प लेकर एलआईजी व ईडब्ल्यू एस श्रेणियों में जिन 620 फ्लैट का निर्माण किया जा रहा है वे आने वाले समय में मानक के तौर पर देखे जाएंगे। सरकारी आवासों का निर्माण ट्रेंड व इसे लेकर पब्लिक परसेप्शन को बदलने की जरूरत लंबे समय से जरूरत महसूस की जा रही थी जिसे आर्ची समूह ने साकार कर दिखाया है। ये विचार चित्तौड़गढ़ सांसद सीपी जोशी ने देबारी पावर हाउस के सामने आर्चीज गैलेक्सी टाउनशिप के सेम्पल फ्लैट तथा टाउनशिप प्रोजेक्ट के उद्घाटन समारोह में व्यक्त किये।

प्रोजेक्ट का शुभारंभ मुख्य अतिथि चित्तौड़गढ़ सांसद सीपी जोशी, यूआईटी चेयरमैन रविन्द्र श्रीमाली, राजस्थान मरूधरा ग्रामीण बैंक के चेयरमैन एसपी श्रीमाली ने आर्ची समूह के ऋषभ भाणावत एवं संजय बांठिया की मौजूदगी में किया।

यूआईटी चेयरमैन रविन्द्र श्रीमाली ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का सबको आवास दिलाने का सपना सच करने के लिए हम सभी कृत संकल्पित हैं। आर्चीज समूह की साझेदारी में बन रहे फ्लैट की लोकेशन बहुत ही अच्छी है साथ ही निर्माण प्रक्रिया में गुणवत्ता से समझौता किए बिना हर बारीकी का जो ध्यान रखा जा रहा है, वह सचमुच काबिले तारीफ है। राजस्थान मरूधरा ग्रामीण बैंक के चेयरमैन एसपी श्रीमाली ने सब्सिडी और बैंक के माध्यम से नियमानुसार रियायती दरों पर दिए जाने वाले ऋणों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि संपूर्ण प्रक्रिया ऐसी रखी गई है कि आवेदक का अपने घर का सपना पूरा हो और किस्तें भी बड़ी आसानी से चुकाई जा सकें।

'आर्ची समूह' के ऋषभ भाणावत एवं संजय बांठिया ने बताया कि उनका सपना था कि आर्थिक रूप से कमजोर तबके के लोगों को न्यूनतम कीमत में एक ऐसा घर मिले जो सभी सुविधाओं से परिपूर्ण हो। नींव से लेकर फिनिशिंग तक ऐसी उच्च गुणवत्ता की सामग्री काम में ली जाए कि इस श्रेणी में गुणवत्ता के नए मानक स्थापित हो जाएं। जिसे देखते ही 'मकान' की जगह अपने सतरंगी सपनों वाले 'घर' वाली एनर्जेटिक फीलिंग आ सके। यह सपना अब मुख्यमंत्री आवास योजना के तहत पूरा होने जा रहा है। इस योजना में आवास निर्माण का जिम्मा मिलते ही समूह की ओर से वास्तु के अनुरूप बेहतरीन इंजीनियरिंग कौशल के साथ युद्ध स्तर पर निर्माण कार्य शुरू हो चुका है।

श्री भाणावत ने बताया कि इस टाउनशिप की सबसे खास बात यह है कि 75 प्रतिशत क्षेत्र खुला रखा गया है। इसमें कुल दस-दस मंजिलों वाले छह टावर बनेंगे जिनके नाम पृथ्वी, बुध, मंगल, बृहस्पति, वरूण, शुक्र रखा जाएगा। आर्ची गैलेक्सी टाउनशिप कई मायनों में खास है। यहां आवेदक को फ्लैट के लिए एकमुश्त पैसा जुटाने में भी परेशान नहीं होगी। खरीदारों को 6 लाख रुपए के लोन पर 6.5 प्रतिशत सब्सिडी लोन खाते में एनपीवी ऋण संस्थान के माध्यम से सीधे ही जमा की जाएगी जो करीब 2.67 लाख की बनती है। राज्य सरकार की ओर से पंजीयन शुल्क में भी भारी छूट दी गई है। वर्तमान में 7 प्रतिशत की बजाय ईडब्ल्यूएस पर केवल 1 प्रतिशत, एलआईजी श्रेणी में 2 प्रतिशत ही पंजीयन शुल्क लगेगा। यही नहीं, अभी सरकार इस प्रकार के निर्माण पर 12 प्रतिशत की जीएसटी ले रही है मगर इसमें 4 प्रतिशत की छूट देकर केवल 8 प्रतिशत ही जीएसटी ही देना होगा।

उन्होंने बताया कि आर्थिक रूप से कमजोर (ईडब्ल्यू एस) वर्ग योजना 3 लाख रुपए तक की सालाना आय वालों के लिए है। इसमें कुल 200 फ्लैट की सौगात मिलेगी। इसमें सुपर बिल्टअप एरिया 516 वर्गफीट होगा। अनुमानित कीमत 9 लाख 91 हजार रुपए होगी। इसमें वन रूम, हॉल, कीचन, अटैच व कॉमन टॉयलेट, बॉलकनी होंगे। रूम दस फीट 6 इंच गुणा 10 फीट के होंगे। इसको भी ड्रॉ में नाम नहीं आने पर पुन: लौटा दिया जाएगा। अल्प आय (एलआईजी) वर्ग योजना 6 लाख रुपए तक की सालाना आय वालों के लिए है। इस श्रेणी में 420 लैट की सौगात मिलेगी। इसमें सुपर बिल्टअप एरिया 678 वर्गफीट है। अनुमानित कीमत 14 लाख 91 हजार रुपए होगी। इसमें दो बेडरूम, एक अटैच टॉयलेट, हॉल, बड़ी बॉलकनी, एक कॉमन टॉयलेट की सुविधा मिलेगी।

आवेदन 'आर्ची गैलेक्सी टाउनशिप' देबारी पावर हाउस के सामने स्थित साइट ऑफिस, 100 फीट रोड शोभागपुरा सर्कल के फोर्टीज हॉस्पिटल के पास आर्ची अरिहंत बिल्डिंग, शक्तिनगर में आंध्रा बैंक के पास बांठिया भवन एवं आरएमजीबी बैंक, बापू बाजार से प्राप्त किये जा सकते हैं। आवेदन के लगभग 45 दिनों के बाद लॉटरी प्रस्तावित है। इस योजना के अंतर्गत यहां 20 हजार वर्गफीट का सेंट्रल गार्डन, सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट, फायर सेफ्टी/फायर फाइटिंग सिस्टम, वर्षा जल संग्रहण, हर घर में आरओ वाटर सप्लाई, ओपन जिम, चिल्ड्रन प्लेस एरिया, मंदिर, कम्यूनिटी एंड पार्टी हॉल, ओपन वालीबॉल व बेडमिंटन कोर्ट, इंडोर गेम्स, शॉपिंग एरिया, क्लिनिक, बैंक, एटीएम, पोस्टल सुविधाएं, लिफ्ट, कॉमन एरिया में पावर बेकअप, प्लांटेशन व ग्रीनरी, रेजिडेंशियल एरिया में सेपरेट एंट्री व एक्जिट तथा सिक्योरिटी केबिन की सुविधाएं होंगी। समारोह में पूर्व सांसद रघुवीर मीणा, डीआईजी प्रसन्नकुमार खमेसरा, ब्रह्माकुमारी रीटा बहिन, विजयलक्ष्मी बहिन, बीएस कानावत, प्रियव्रत पंड्या, परमानंद पाटीदार, एम एल चौहान, शैलेष सरूपरिया, डूंगरसिंह कोठारी, हिमांशु चौधरी, राजीव जैन, लोकेश मल्हारा, महावीर भाणावत, संभव बांठिया उपस्थित थे।

छपते-छपते

मुनि तरूणसागरजी का परलोक गमन

अपने कड़वे प्रवचनों से राष्ट्रव्यापी पहचान बनाने वाले ख्यातलब्ध जैन संत मुनिश्री मरूणसागरजी का एक सिंतबर को निधन हो गया। उदयपुर में वर्ष 2011 में हुए चातुर्मास की समाप्ति पर मुनिश्री तरूणसागरजी ने डॉ. महेन्द्र भानावत के निवास पर पदार्पण किया। उनके साथ समाज के कई गणमान्य श्रावक मौजूद थे। अल्पकालीन पगल्ये के दौरान डॉ. महेन्द्र भानावत के साथ उनके सुपुत्र डॉ. तुक्तक और बहू रंजना ने मुनिश्री की विधिपूर्वक वंदना की। इस दौरान डॉ. भानावत ने अपने द्वारा लिखित एक दर्जन पुस्तकें मुनिश्री को भेंट की। मुनिश्री ने आशीर्वादस्वरूप कहा कि पिचहत्तर की उम्र में अस्सी किताबें वही लिख सकता है जो लक्ष्यबद्ध जीवन जीता हुआ सार्थक काम करने की ललक लिये हो। इस दृष्टि से डॉ. महेन्द्र भानावत का अवदान मूल्यवान ही कहा जाना चाहिये। व्यक्ति तो मरणधर्मा हो सकता है किंतु साहित्य सृजन कभी मरता नहीं है और न कोशिशपूर्वक मिटाया ही जा सकता है। इस दृष्टि से साहित्य की यह अमरता असंदिग्ध है। मुनिश्री ने कहा कि सेवा का मनोयोग अनवरत चलता रहे। जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि भी यही है कि जिस क्षेत्र में व्यक्ति पकड़ रखता है उसका लाभ समाज व राष्ट्र को मिले।

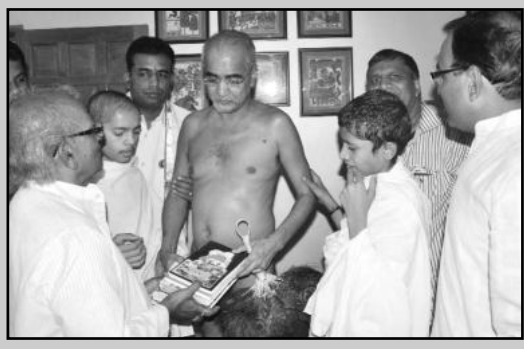

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।